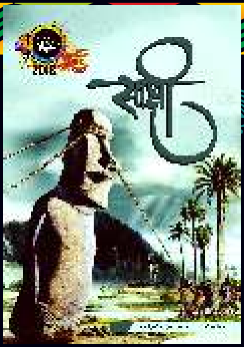
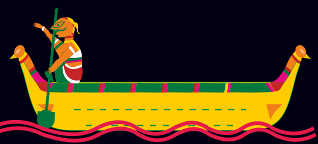


सम्मेलन की स्थापना के
40 वर्ष पूरे होने का 'साक्षी'



सहयोग राशि 125 ₹

बांका 45

प्रकाशन वर्ष
2023

स्थापना वर्ष : अप्रैल 1978 | जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन बांका के 45वें वर्ष की स्मारिका



हिंदी के सशक्तिकरण हेतु पिछले 45 वर्षों से संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का स्वतंत्र व समुन्नत मंच



जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन बांका
की स्थापना के 45वें वर्ष की स्मारिका

जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन बांका,
अविनाश प्लेस, पुरानी बस स्टेंड के सामने,
बांका, बिहार – 813 102

jhss.banka@gmail.com 7549 986 602
7549 986 602, 7667 361 713, 6203 225179

प्रकाशक अचल भारती (अध्यक्ष) के लिए चंदन कुमार झा
द्वारा पद्म टेक्स्ट-ओ-ग्राफिक, बौंसी द्वारा मुद्रण व प्रिंटिंग

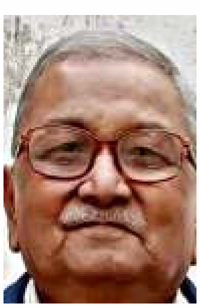


अनुक्रमणिका

पुरोवाक



आधी सदी के मुहाने से



शंकर दास

चिर अजश्र प्रवाह में गतिमान साहित्य सम्मेलन को अपने सफल 45 वर्ष पूरा करते हुए लगता है कि यह काल-खंड अगर ज्यादा नहीं, तो इतना कम भी नहीं होता कि उसे चिन्मय आनंद की कोई अनुभूति ही न हो। इस 45वें स्थापना वर्ष की तरह सन 2028 भी अर्द्धशताब्दी वर्ष होगा। सम्मेलन अपने इस दायित्व को समझ रहा है। उसे याद है 15 अप्रैल 1978 की वह गुनगुनी शाम, वह जिला परिषद, बांका का डाक बंगला और जमा हुए 56 अनुरागी जन। जहाँ अनुमंडलीय साहित्य सम्मेलन बांका का करतल ध्वनि के साथ गठन हुआ था। कुछ तदर्थ समितियां भी बनीं।

फिर तो, लोग मिलते गए, कारवां बढ़ता गया हिन्दोस्ताँ बनता गया। इस यात्रा का एक अहम पड़ाव रहा वर्ष 1991 में बांका का जिला घोषित होना। फलस्वरुप सम्मेलन भी स्वाभाविक रूप से सन 1992 में जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, बांका (निबंधन संख्या : 852/92 बि.हि.सा.स., पटना) के नाम से नामित, चिन्हित, नवगठित हुआ। तब से आज तक कभी इसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। भले ही कोरोना काल में सक्रियताएं कुछ मद्धम हुई इसकी धड़कनों ने तब भी अपने स्पंदनों को सहेजे रखा।

यहाँ सम्मेलन के लिए अभिभावक तुल्य 92 वर्षीय प्रो. आर. एन. भगत स्मरणीय हैं। स्थापित एवं थोक में प्रकाशित डॉ. गिरिजा शंकर मोदी एवं कुंज बिहारी दास की चर्चा के साथ ही 'माधवन साहित्य रत्न' से सम्मानित सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. अचल भारती को कैसे भूलूं! हाल के कुछेक कार्यक्रमों को छोड़ विगत 45 वर्षों में सम्मेलन के सभी कार्यक्रमों में शामिल होकर उसके संचालन का सौभाग्य खुद मेरे नाम रहा। सम्मेलन के संस्थापकों में रहे हमजुल्फ राम दा (प्रो. रामचंद्र घोष) का असमय महाप्रयाण एक अपूरणीय क्षति है।

चर्चा अब अन्य कुछ नाम की भी होनी चाहिए। सम्मेलन की धमनियों के युवा स्पन्दनों में प्रमुखतया सोमकृष्ण, भोला सिंह 'पुष्कर', राहुल डोकानिया, संजीव शर्मा, आशीष महासागर, आशीष सागर, कुमार संभव, डॉ. आलोक प्रेमी, टॉफी आनंद, जयकृष्ण पासवान, कौशल कु. सिंह, समीर सिंह राठौर, अमित कुमार रॉय, दीपक उपाध्याय, राजीव रंजन, दुर्गेश नंदन, अभिषेक पाण्डेय, आशुतोष चौधरी, मयंक दत्ता, डॉ. प्रदीप प्रभात, डॉ. चंदन मधुकर, प्रवीण कुमार प्रणव, प्रांशु राज (बाल कवि) व अन्य विशिष्ट भूमिकाओं में रहे।

सम्मेलन के वरिष्ठता प्राप्त सक्रिय प्रमुख नाम हैं - प्रो. एस के. पी. सिन्हा, उदयेश रवि, डॉ. रवि रंजन, अम्बिका झा 'हनुमान', खुशी लाल मंजर, परमानन्द प्रेमी, डॉ. अली इमाम, डॉ. मिसम रिजवी, डॉ. नवीन निकुंज, अरुण कु. सिन्हा, दीनानाथ प्राणसुखका, संजय घोष मासूम, प्रकाश सेन प्रीतम, विकास सिंह गुलटी, सुनील कु. झा 'सारंग', अशोक झा 'अरूण', नंदकिशोर प्रेमधन, सुनील दास, प्रमोद सिंह फितरत, नकुल प्रसाद चौधरी, राजीव नयन तिवारी, मनोज मिश्र उर्फ अनंग कश्यप, सुजीत कु. संगम, प्रो. अशोक कु. सिंह, डॉ. पुष्प कु. राय, कैलाश प्रसाद सिंह, कृष्ण केशव, सतीश चन्द्र, कैलाश ठाकुर, पुष्प भारती, अनिल विकल, प्रभाकर सुमन, पवन बांके बिहारी, लक्ष्मण मंडल, ग्राम-ग्राम अंगिका के सूत्रधार सरयुग पंडित सौम्य, राजीव रंजन सिन्हा, अश्विनी श्रीवास्तव, शिव पूजन सिंह, आचार्य रघुनंदन शास्त्री, रामजी चन्द्र, अशोक आत्मदर्शी, अनिल कुमार सिंह, बासुकी भगत, शिव कु. सिंह 'शिव', श्रीधर यादव, उमाकान्त प्रेम, प्रो. जनार्दन प्रसाद, जय प्रकाश गुप्ता, प्रो. सुरेश बिंद, बादशाह हाकिम उर्फ इजहार अशरफ, प्रशान्त कुमार सिंह वगैरह।

प्रसन्नता है कि विगत वर्षों में आधी आबादी की प्रतिभाओं का रुझान सम्मेलन की उपलब्धि रही है। इसमें प्रमुख नाम है- डॉ.वेणुवाला, डॉ. श्वेता, नूतन कुमारी, कांति कीर्ति, ज्योति मिश्रा, डॉ. रश्मि, पुष्पा देवी, प्रिया सुहानी, डॉ. संगीता, अंशुमाला झा, सुषमा पाठक, संयुक्ता भारती वगैरह।

यहाँ कुछ ऐसे वरिष्ठ नामों की चर्चा भी आवश्यक है, जिनसे सम्मेलन का अटूट नाता रहा है। इनमें सर्वश्री प्राणमोहन 'प्राण', अनूपजी, डॉ. अमरेंद्र, डॉ. अनिरुद्ध विमल, डॉ. शिवनारायण, डॉ. अश्विनी, प्रसून लतांत, सुरेंद्र यादव, धनंजय मिश्र, गंगा राव , डॉ. कामख्या चरण मिश्र आदि प्रमुख हैं।

निर्विवादतः नामों की यह सूची अपूर्ण है। सम्मेलन के विराट आसमान में सभी तारे-सितारे चुन पाना हंसी-खेल तो नहीं। यह आलेख फिलहाल सम्मेलन की स्थापना एवं हमसे जुड़े चेहरों की चर्चा मात्र तक ही सीमित है। इसके कार्यक्रम उद्देश्य एवं अन्य पक्षों की चर्चा हम समय समय पर करते रहे हैं और करते भी रहेंगे। अन्त में बांका जिला के सभी निवासियों-प्रवासियों सहित, ज्ञात-अज्ञात प्रतिभाओं, सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं विविध संचार माध्यमों का हार्दिक अभिनन्दन, चंदन-वंदन व स्वागतम।



संपादकीय



डॉ. अचल भारती

नदी, झरने, पहाड़ व जंगल, किसी काल-खण्ड का भूगोल, इतिहास, वहाँ का अर्थ शास्त्र, नैतिक शास्त्र एवं संघर्ष व घर्षण-प्रयोग से उत्पन्न ज्ञान शास्त्र, साक्षी-स्वरुपा समाज शास्त्र इत्यादि को समेटे होते हैं। वह विविध सांस्कृतिक-मूल्यों के क्षरण का रक्षण भी करता आया है। वह युगीन यथार्थ को ढोता, आने वाले कल के लिए 'धरोहर' साबित हो जाता है। और, उन तमाम मूल्यों का संवर्धन, संरक्षण तत्कालीन साहित्य में होता देखा जा सकता है। साहित्य हर काल-खण्ड में अपनी जिम्मेदारी को समझता, समर्पण भाव से शब्द-शक्ति की पूर्णता को पारिभाषित करता, संवेदना के सहकारी भावों को आकाश देता है, न कि बातूनी बाणों का संधान कर कोई अमानवीय शिकार करता। निस्संदेह पर्यटन-परिदृश्य की तरह 'साहित्य' लोक लुभावन, आकर्षण के केन्द्र में रहने वाले उस शिलालेख की तरह है, जो स्वयं में ही हतिहास के साक्ष्य हो जाते हैं।

प्रत्येक कालावधि में 'साहित्य' की सहगामिनी रही है 'शिक्षा', जो देश-काल और परिस्थिति के अनुरुप अपना स्वरुप गढ़ती है, समय के संदर्भों को रेखांकित करती है। सुख, शांति और समृद्धि , पाठियों के मूलक-मंत्र में तभी आ पाती है जब शिक्षा को सम्पूर्णता में तथा, शिक्षकों के समर्पण भाव में देखा, गुना, समझा जा सकता है। 'साहित्य' की तरह 'शिक्षा' के समर्पित भावों की ऐच्छिक-क्रिया-शक्ति का विशेष महत्व है जो शिक्षक व शिक्षा को तेजोमय बनाता है।

कालांतर के अनुभव की जमी हुई अनुभूति और संघर्षरत मन दोनों मिलकर, अपने-आप में एक ऊर्जावान क्रियात्मक 'मस्तिष्क बनाता है जो सामने की हर पीढ़ी को 'दिमागी-शक्ति' प्रदान करता है। नियंत्रित 'मस्तिष्क' के अभाव में 'शक्ति' की दिशाविहीनता जगजाहिर है। 'शक्ति' की पूजा निर्माण के क्षणों में होती है न कि विध्वंस के पलों में। जिन्हें 'साहित्य' में इसकी झलक नहीं मिल पाती और वे साहित्य के बीज-रूप में वैयक्तिक महत्वाकांक्षा के बीज-मंत्र बोने के आदि हैं, उनके शिक्षित व साहित्यिक होने पर संदेह है।

सही साहित्य और स्वस्थ-शिक्षा हमारे, आपके ज्ञान-चक्षु के 'समझ की खिड़की को खोल' खुला व व्यापक आकाश देता है किंतु हठधर्मिता के धुंध में इसके अस्तित्व के मिट जाने की चिंता का डर भी बना रहता है, जो संभार ढोने वाली पीढ़ी के लिए, अति चिंता का विषय है।

यहाँ आकर बांका जिला, भूत से वर्त्तमान की दूरी नापता, स्वर्णिम-भविष्य के क्षितिज को निहारता, अपने आत्मबल से ज्योति-पूंज को बटोरता दिखाई देता है। निरन्तर के पैतालीस वर्षों की साहित्यक-यात्रा के पड़ाव में क्रमश : जो पद-चिह्न साथ-साथ हैं, वे 'बांका -45 ' के मूल्यवान सहयात्री हैं, बांका के इतिहास में गढ़े हुए मील के पत्थर हैं। निश्चय ही बांका जिला वासियों के आत्म-सम्मान व गौरव के दस्तावेजी स्रोत हैं 'बांका-45।' सफलता की इस यात्रा में साथ चल रहे प्रबुद्ध सर्वजनों व जिला वासियों को साधुवाद!



केरल के अलप्पुझा के मावेलिक्करा ग्राम में जन्मे आनंद शंकर माधवन ने युवावस्था में गृहत्याग दिया। बाद में वे स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। इसी दौरान गिरफ्तार किये गये और इन्हें भागलपुर के सेंट्रल जेल में डाल

साहित्य-मनीषी आनन्द शंकर माधवन की साहित्यिक-यात्रा 1959 से आरंभ होकर 2005 के आते-आते, लगभग ठहर-सी जाती है। लेकिन इस अंतराल में उनकी साठ-बासठ पुस्तकें, हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञों, पाठकों के समक्ष आकर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ चुकी होती है और वे साहित्य के जाने-माने सशक्त हस्ताक्षर भी हो जाते हैं।

माधवन साहित्य की लम्बी फेहरिस्त की शुरुआत, उनकी पहली पुस्तक 'बिखरे हीरे' से होती है, जहाँ उनकी पैनी निगाहें परिवेश से बहुत-कुछ समेट कर, निरन्तर आगे की यात्रा में बढ़ जाते हैं। दूसरी पुस्तक 'हिन्दी आंदोलन' राष्ट्रीय भाषा-चिंता की मुख्य-धारा से जुड़े होने का प्रमाण दे जाता है। उनके दो चर्चित उपन्यास 'अनामंत्रित मेहमान' व 'प्रसव वेदना' लगभग छः साल के अंतराल पर सामने आते हैं। 1962 में अनामंत्रित मेहमान को बिहार-सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया जाता है (जिसमें पूरे एक लाख की राशि भी शामिल थी)। 'अनामंत्रित मेहमान' 854 पृष्ठों में लिखी गई थी जबकि 'प्रसव वेदना' 1353 पृष्ठों (दो खण्डों) में। इन पूरे औपन्यासिक प्रकरण में माधवन ने अंधविश्वास, पाखण्ड, अस्पृश्यता, शोषण, विषमता आदि को दूर करने की चेष्टा में, आध्यात्म मूलक-धर्म व साम्यवाद को जोड़ने (एक नये प्रयोग में) का प्रयास किया है। विरागी रामचन्द्र का पुत्र जसवन्त तीनों-खण्डों में निरन्तरता बनाये हुए है। प्रथम खण्ड में जसवन्त बतौर 'अनामंत्रित मेहमान' पाठकों के समक्ष आता है। 'प्रसव वेदना' में सुजाता के साथ का घिनौना व्यापार, किस तरह परिवर्तित-रुप में 'संघमित्रा' के माध्यम से सामने आता है और वह 'प्रसव वेदना' की पीड़ा से मर्माहत कर जाता है, उसका खुलासा है। यहाँ घटनाओं व कथाओं का ताना-बाना मुल्क के बंटवारे पर आधारित है जिसमें मानवीय संबंधों की सच्चाई का पर्दाफाश है।

'हिन्दी आन्दोलन' की तरह 'माधव निदान' व 'वृहत्तर भारती' में भी समाज और राष्ट्र के प्रति माधवन की चिंता स्पष्ट है। 'पल्लवी' में वे एक सफल गुरु की तरह सामने आते हैं और साहित्य-लेखन का अपना उद्देश्य भी प्रकट कर जाते हैं। 'कवि' में माधवन सत्य का दर्शन करते हैं, औरों को भी दर्शन के लिए प्रेरित करते हैं। 'श्रीजिता' में वे एक समाज-सुधारक की तरह सामने आते हैं जबकि 'श्वेतांबुजा' में वे एक परिपक्व कवि की तरह यथार्थ-सत्य की स्वीकारोक्ति में जीते प्रतीत होते हैं।

माधवन अपने पूरे साधना-काल में आर्ष-परम्परा के अन्वेषक ही रहे, लेकिन वो पुराने को लेकर कभी भी आसक्त नहीं रहे और न ही वो आधुनिकता व उत्तर-आधुनिकता के विशेष आग्रही ही रहे। वे हमेशा एक संतुलन की अवस्था में विचरण करते देखे जाते हैं -

मैं अतीत से मुक्ति चाहता हूँ
भविष्य से भी
कि वर्त्तमान पर शासन कर सकूँ

'एकाक्षी ', 'पुरुषार्थ' तथा 'शिवबालिका' यह पटकथा-लेखन से जुड़ा विषय है जबकि 'अनल शलाका' एवं 'आरती' दोनों ही उनके निबन्ध-संग्रह हैं। 'प्रसून-पंथ' उनकी एकतीस संग्रहित कहानियों का संकलन है जो कभी 'प्राच्य-भारती' के अलग-अलग अंकों में 'आशमा' के नाम से छपी थी, जिसे बाद में 'प्रसून-पंथ' नाम दिया गया। 'प्रथम याम' में माधवन जी के ही बाल्यकाल की आत्मकथा है जो विगत के एक शिक्षार्थी की वैचारिक-यात्रा की चित्र-वृत्ति लिए है। 'माधवन निदान' व 'वर्षा' गद्य में लिखा गया सुभाषित है जबकि संस्कृत में इसका प्रचलन

दिया गया। वहां से रिहा होने पर वे मंदार हिल आ गये। यहां उन्होंने 'मंदार विद्यापीठ' की स्थापना की और यहीं के होकर रह गये। विद्यापीठ परिसर में रहकर लगभग 60 पुस्तकों की रचना की। कुछ पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया।

माधवन साहित्य

एक संक्षिप्त परिचय

डॉ. अचल भारती

पद्यात्मक है। 'श्रेयसी' में माधवन जी के विलक्षण व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। जिसमें उनके विपुल सारस्वत-साधना की झलक मिलती है।

साहित्य का दर्शन के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। माधवन जी इन संबंधों को भी दृढ़ता के साथ स्वीकारते रहे हैं। पौर्वात्य एवं पाश्चात्य-दर्शन पर उनकी दृष्टिगत-विवेचना, उन्हें वैश्विक बना देता है। 'वाल्टर', 'नीत्शे', 'प्लेटो', 'अरस्तू', 'सुकरात', 'अद्वैत-समाज', 'गीता-तत्व', 'उपनिषद्सार' ये सारे दृष्टान्त-स्वरुप हैं। 'जैन-धर्म', 'गांधी साधना', 'श्रेयवाद' भी इससे अलग नहीं है।

'शिवधाम', 'शिवबालिका', 'नन्दी', 'गंगा', 'आदि भागीरथी', 'दीपाराधना', 'मृत्युंजय साधना', 'स्वर्ग वासन्ती', 'खोजने गया मैं हिरण्यगर्भ को', 'परमदर्शन', 'हिरण्यगर्भ', 'जाह्नवी' आदि पांडुलिपियों में माधवन आध्यात्मिकता के अमरत्व-साधना की अभिव्यक्ति को लिए हैं जबकि 'अक्षय लेखनी', 'पुरुषार्थी', 'उत्थान शतक', 'ऐश्वर्य शतक', 'संजीवनी', 'उषा' आदि में उनकी आंतरिक-ऊर्जा की अखण्ड-शक्ति का शब्दावेग है।

वैश्विक मानवीय-मूल्यों पर आधारित माधवन के उत्कृष्ट-भाव, परिवार के एकत्व-भाव की परिकल्पना है जिसका दृष्टान्त 'विश्व कल्याणी', 'विश्व निलयम', 'विश्व परिवार योजना', 'श्रेय जीवन' आदि पुस्तकों में देखा जा सकता है।

साहित्य और जीवन-दर्शन, प्रकृति से कतई भिन्न नहीं है। ऐसे में माधवन प्रकृति-रत रहकर 'चित्रशाला', 'घास के फूल', 'पल्लवी' आदि रचनाओं में चैतन्य-भावाभिमुख होते दिखाई देते हैं। 'घास के फूल' में वे अपनी भाव-पीड़ा को इस तरह व्यक्त करते हैं -

मैं सूर्यदेव जैसा उदित हुआ हूँ
प्रकाश को प्रसव करने की पीड़ा अति दारुण है।

इसी तरह संस्कृति के संरक्षक माधवन 'तितलियाँ' में भारतीय-संस्कृति को रुग्नावस्था में मृतप्राय पाते हैं, यह उन्हें विचलित करने के लिए काफी है -

क्या जानें?
यह किस देश की संस्कृति
सड़क पर मरी पड़ी है।

समय की नब्ज को पकड़कर चलने वाले माधवन 'श्वेताम्बुजा' में जीवनोपयोगी मुक्तकों से गुजर रहे होते हैं। इनकी अतिरिक्त पुस्तकों में 'चारु नारायणम्', 'भारतीय संस्कृति के बुनियादी सिद्धांत 'नक्षत्रमाला', 'श्रेय साधना की भूमिका' आदि प्रकाशित होकर भी आज लगभग अप्राप्य है। कुछ पाण्डुलिपियाँ लेखन-क्रम में आधी-अधूरी ही रह गयी, मसलन 'बाजूबन्द खुल-खुल जाय', 'सहस्रमुखी रुद्राक्ष', 'खिले थे फूल लाखों मगर वो नहीं आई' आदि। इन सृजन-संकल्पों के बीच उनकी एक और महत इच्छा अधूरी रह गयी जिसकी चर्चा लेखक से की थी कभी। उनके ख्याल थे, आचार्य मम्मट ने 'काव्य-प्रकाश' दिया, महर्षि दयानंद ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' दिया, इस नाचीज माधवन को भी 'माधवन-प्रकाश' देना चाहिए। बावजूद इसके वे अपने कर्म-साध्य कालखंड में साहित्य के समर्थ-सर्जक ही रहे और उनका साहित्य प्रकृति, आर्ष-ज्ञान, राष्ट्र-धर्म, दैवी-संस्कृति तथा मानव जीवन-दर्शन के प्रति अनमोल-भावों व विचारों का संवाहक ही रहा।

कलम की पुकार



समीर सिंह राठौड़
चटमाडीह, शंभूगंज, बांका
संपर्क : 7903 205 613

है वेदना यही छल रहा आज मन
पीर है प्रीत की और छलकते नयन
प्रेम छोड़ जंग जिसको खोजता है जन
सूर्य में तपन, चमन सींचता है घन।।

यहाँ-वहाँ है द्वेष, द्वेष में पला है तन
प्रेम को त्याग, नफरतों में है मगन
प्रबल आश है पास सुलगता अगन
समृद्ध है शहर, चित्त से उठ रही जलन।।

मानवों की लाश, बाज़ खा रहा यहाँ
दुग्ध बिन बिलख रहा शिशु इस जहां
प्रलय है पाप का, पाप घट रहा कहाँ
चीत्कार है पुकार, राग द्वेष हैं जहाँ।।

सौगंध ले धरा का प्राण त्यागते हैं लाल
जो भारती का सूत उसे क्या करेगा काल
गद्दार है गद्दी के पीछे, बिछा रहा है जाल
लूट करके देश को क्यों ठोकता है ताल ?

कलम की पुकार, सुन रहा है आज कौन
जो प्रबुद्ध, साहसी, वीरता है आज मौन
आवाज़ दो, आवाज़ को कर बुलंद यहाँ
बर्बाद कर, बर्बादियों के जयचंद यहाँ।।

वक्त





राहुल डोकानिया
डोकानिया मार्केट, बांका
संपर्क : 7903 514 451

वक्त के कई फिजा और कई रंग होते हैं
देख कर समझ ले ऐसे बहुत कम होते हैं।
तू जो होती सनम हम भी कम न होते
इस चमन में गुलशन कभी कम न होते।
तू जो साथ थी मैंने आगे भी पहल की
मुड़ कर न देखा, महल ही महल थे।
इस महल में चांद तारे भी कम न थे
वक्त के कई फिजा और कई रंग थे।
टूट गये वो सारे सपने क्षण भर में
तू जो नहीं थी केवल हम ही हम थे।
मुझे मेरे सपनों पर बड़ा तरस आया
खड़ा था मैं, थी खंडहर की छाया।
वह चांद-तारे भी निशांत हो गये थे
तू जो न थी हम तो खो से गये थे।
वक्त के कई फिजा, रंग और भी थे
फिर एक आस जगी तुम जो संग थी।
दिखा एक सपना, मिला कोई अपना
तू जो थी, अब थी बाहर ही बहारें।
मैं कहीं नहीं तेरे चमन में ही तो था
ये रंग और फिजा वक्त ही तो थे।

लघुकथा



डॉ. शिवनारायण
सम्पादक : 'नई-धारा', पटना
योगडीहा, धोरैया, बांका, बिहार
मो. : 9334 333 509

जहर के खिलाफ

प्रशांत जहर की शीशी अपने मुंह में उढ़ेलना चाह ही रहा था कि एक झटके से शीशी दूर जा गिरी! देखा, सामने पापा खड़े थे! वह सिहर उठा, किंतु तत्क्षण ही बिफर पड़ा -'मुझे मर जाने दीजिये.... मैं जीना नहीं चाहता हूं!'

'पर, बात क्या है बेटे ?'

'आज मेरी नवीं कक्षा की परीक्षा का रिजल्ट आया है पापा! शशिभूषण अव्वल आया, जिसे मैं पढ़ाया करता था और मैं फेल हो गया! यह सब मेहरा सर का काम है! शशिभूषण उनसे ट्यूशन पढ़ता था, फिर वह उनकी जाति का भी है; जबकि मैंने कभी उन्हें अनावश्यक महत्व नहीं दिया और न ही उनसे ट्यूशन पढ़ी! मेहरा सर ने मुझे प्रैक्टिकल में केवल आठ अंक दिए, जबकि पास होने के लिए बीस अंक चाहिए थे!'

'अच्छा, ये बात है! इतनी छोटी सी बात पर तुम आत्महत्या कर रहे हो ?'

'आप इसे छोटी सी बात कहते हैं, यहाँ मेरी जिन्दगी खराब हो रही है...!'

'ठीक है, इस बार फेल हो जाने से तुम्हारी ज़िंदगी खराब हो रही है, तो तुम आत्महत्या कर लो! पर मैंने तुम्हें हमेशा अपने ढंग से जीने की स्वतंत्रता दी है तो आज मरने की आजादी भी दूंगा! किंतु आत्महत्या करने से पहले तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दोगे ?'

'क्या ?' प्रशांत ने उत्तेजना में कहा, तो उसके पापा ने पूछा -'तुम फिर से परीक्षा देकर पास कर जाओ! फिर मैट्रिक से लेकर एम. एससी. तक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करते जाओ! यूपीएससी की परीक्षा दो और आई.ए.एस. के लिए चुन लिए जाओ! शासन में जिलाधिकारी से लेकर मुख्य सचिव तक बनो! रिटायर्ड होने के बाद तुम्हारी प्रशासनिक कुशलता को देखते हुए तुम्हें किसी प्रदेश का राज्यपाल बना दिया जाए और उसके बाद भी तुम्हें इस देश के उपराष्ट्रपति तक बनने का सौभाग्य मिले; तो जीवन में इतनी सारी उपलब्धियों को पाने के बाद अंत में तुम्हें अपनी आत्मकथा लिखनी पड़े तो तुम उस आत्मकथा में इस फेल होने वाली घटना की चर्चा किस रूप में करोगे ?'

'पापा की बात सुन प्रशांत के चेहरे पर विद्रुप सी मुस्कान तिर गयी! उसने कहा -'जीवन में इतनी सारी उपलब्धियों को पाने के बाद तो मैं बूढ़ा हो जाऊंगा... और आत्मकथा लिखते समय शायद मैं उस घटना को याद भी नहीं रख पाऊंगा...। अब जब घटना याद ही नहीं रहेगी तो फिर उस घटना की चर्चा किस रूप में करूँगा, इसका सवाल कहाँ उठता है ?'

'वाह बेटे, सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँच कर अपनी आत्मकथा लिखते समय जिस घटना को याद भी नहीं रख पाओगे, फिर उस छोटी सी घटना के कारण आत्महत्या क्यों कर रहे हो ?'

प्रभात की आंखें यकायक उन्नत विस्तार पा गईं! सहसा वह कुछ बोल न सका, पर उसकी चेतना जैसे सोते से जाग उठी! तभी उसे पापा की निर्णायक आवाज सुनाई पड़ी -'बेटे, अपने रास्ते में कांटे बिछाने वाले को प्रणाम कर आगे बढ़ जाओ! सफलता तुम्हारी राह देख रही है!'

बिहार राज्य पिछड़ा एवं अति पिछड़ा वर्ग **कल्याण विभाग** द्वारा संचालित
बिहार राज्य पिछड़ा वर्ग **वित्त एवं विकास निगम** द्वारा वित्त पोषित

बिहार सरकार

प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र

पिछड़ा एवं अति पिछड़ा वर्ग, पी.बी.एस. कॉलेज, बांका

निःशुल्क कोचिंग



BPSC | UPSC | Railway
Banking | SSC etc.

छात्र-छात्रा की पात्रता

- बिहार राज्य के स्थायी निवासी हों
- पिछड़ा एवं अति पिछड़ा वर्ग के सदस्य हों
- छात्र/छात्रा/अभिभावक की अधिकतम वार्षिक आय एक लाख रुपये तक ही होनी चाहिए
- आयु सीमा एवं न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता संबंधित कोर्स के अंतर्गत होने वाली प्रतियोगिता परीक्षा के लिए निर्धारित न्यूनतम आर्हता के अनुरूप

मूलप्रति अनिवार्य

- आधार कार्ड
- जाति प्रमाण पत्र
- आय प्रमाण पत्र
- निवास प्रमाण पत्र
- सभी शैक्षणिक प्रमाण पत्र
- 3 रंगीन फोटो (पासपोर्ट साइज)



निदेशक

प्रोफेसर सुरेश बिंद
विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
पंडित बालीराम शर्मा कॉलेज, बांका

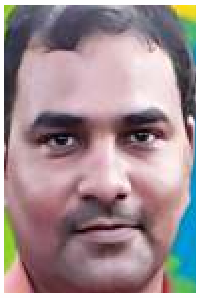
7070025423



नूतन सिन्हा
अलीगंज, बांका
मो. : 9060 682 879

जल रही धरा की हरित छाप

है धरा चिंतित उदास
आशा से तक रही राह
काश उसके आंचल में
उमगे फिर से हरित छाप।
तन उसका चरमरा रहा
रोगों से लड़ते भिड़ते
हरियाली लुट रही प्रांत में
कुल्हाड़ी से यारी करके।
कंठ व्याकुल पाने को
शुद्ध जल-स्वच्छंद पवन
गुम है कहां नदिया उपवन
तू ही बता ऐ नील गगन।
खुद फैलाकर आग क्या
अब चिल्लाना बाप-बाप
मूढ़ मुसाफिर जाग बचाने
अपनी धरा की हरित छाप।



डॉ. रवि रंजन
प्रोफेसर कॉलनी, रजौन, बांका
मो. : 9852 181 159

सवाल अनसुलझा

मूल्य-बोधी पक्ष
मानव-जीवन का
ढूंढता रहता प्राकृत-हल
मगर यथावत बना रहता
अनसुलझा-सा सवाल
ज्यों का त्यों।

प्रदूषण का जहरीला अवसाद
देता रहता त्राहिमाम संदेश
सौंदर्य-खचित प्रकृति को करता
बदरंग
सर्वत्र फैला होता मानवी अहम
रिसता अंतरंग पानी-पानी का
पल-क्षण का साथ के उनके
छिद्रनुमा घड़े से रिसते जल की
तरह।

बाहर का बूंद बनता भी वाष्प
और जीवन यात्रा में हम सभी
चले जाते प्रकृति से दूर, बहुत दूर
कि प्रकृति रह जाती
निज की प्रकृति पर कायम।







कांति कीर्ति

अलीगंज, बांका-813 102
मो. : 9801 957 371

कुटीर

कहां आ गए हम,
कंक्रीट के जंगल में
जिधर देखो उधर,
इमारत अट्टालिका,
जाने किधर गुम हो गए,
घने पेड़ के जंगल?

लोग शौक बागवानी का,
छत पर गमले में
फूल लगाकर पूरा करते
भीषण गर्मी में फूल
पानी की बूंदों के लिए तरसते!

घर था, गौरैया थी
तुलसी चौरा,
आम अनार के पेड़
फूलों से भरी क्यारी,
लोग लुटाते थे स्नेह!
अब तो स्क्वायर फीट का फ्लैट
लोगों को भा रहा,
बीते जमाने की याद में
ईंट की आवास को सब,
उपमा 'कुटीर' का दे रहे!







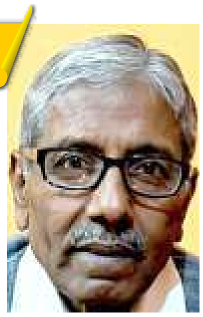
सुजीत कुमार संगम

बड़ी विषहर, बाराहाट, बांका -813 103
मो. : 9534 969 572

कंक्रीट के जंगल से

ईंट और कंक्रीट से बना यह घना जंगल
और उसके ठीक बीचों- बीच गुजरती
चमचमाती काली सड़क,
पूरी रफ्तार से दौड़ती गाड़ियाँ,
भागी जा रही हैं बेतहासा / एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ में।
दूधिया रोशनी से नहा रही इमारतें,
जिनके ऊपरी छज्जों को देखने में
गिर जाती है सर से टोपी और फिर,
रोशनी की चकाचौंध से / चुन्धिया जाती हैं आँखें!
मैं आया हूँ इस मायानगरी में,
अपनी कुछ हसरतों-सपनों को
तलाशने और पूरा करने
मगर इस भागते शहर में / किनसे पूछें चैन का ठिकाना?
कहाँ मिलेगा मुझे?
सपनों को पूरा करने का
मुकम्मल अवसर और आजादी!
किसे रोकें, किसे पूछें ?
कोई ठहरता ही नहीं / पल भर के लिए यहाँ!
बरबस सता रही मुझे
अपनी गाँव की याद!
स्मरण में है ताजा, आज भी
वहां की वो पगडंडी,
जिससे होकर छोड़ने आया था मुझे / मेरा पूरा गाँव अपनी नम आँखें लिए।
शायद मैं अब थक सा गया हूँ,
इस शहर में अपने गाँव को ढूंढते हुए।
ये ढलता सूरज, घोसलों में लौटते पंछी,
तटों को चूमती समंदर की लहरें,
शायद बताना चाहती हैं मुझे,
वक्त हो गया है अब लौटने का / अपने घोंसले की ओर।
दूर कहीं से आती आवाज लाउडस्पीकर की
बहुत सुहाना लग रहा आज मुझे
बज रहे हैं मधुर गीत / 'आ जा रे परदेशी ! तेरा गांव है पुकारे...।'

लघुकथा



सुनील कुमार दास
बस स्टैंड, बांका
मो. : 9153 026 854

घर वापसी

बालकनी में बैठे देवेंद्र का ध्यान अनायास ही सामने की अपार्टमेंट में आयी कार की ओर गयी। उसी समय एक खूबसूरत महिला अपने दो बच्चों के साथ आकर कार सवार हुई और फुर्र... उसे देखते ही देवेंद्र का चेहरा फक्क! पल भर में वह पसीने में नहा गया। वह तो शालू थी उसकी पत्नी, जिसे दस वर्ष पूर्व ही वह अमेरिका से ही संबंध विच्छेद कर चुका था। दरअसल विदेश पहुंचते ही उसमें अकड़फ़ू और खामखा का गुरूर सा भर गया था। वहीं की एक गोरी मैम टेरेसा से विवाह कर वहां रम गया था। दस वर्ष पूर्व की वह सारी घटना किसी चलचित्र की तरह उसके मस्तिष्क में घूमने लगा...

उसे याद है कि इंजीनियरिंग का रिजल्ट आने के साथ ही यू.एस.ए. की एक नामी कंपनी में मोटी तनख्वाह पर उसकी नौकरी लग गई। विदेश जाने से पहले उसके पिताजी ने उसकी शादी कर देने में भलाई समझी। कुल मिलाकर बगल गांव के जमींदार की खूबसूरत एम.ए. गोल्ड मेडलिस्ट बेटी शालिनी उर्फ़ शालू के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। देवेंद्र भी शालू जैसी जीवन-संगिनी पाकर आह्लादित था। भरे मन से दिल पर पत्थर रखकर शालू ने उसे अमेरिका के लिए विदा किया। आरम्भ में सबकुछ ठीक-ठाक ही था। पत्राचार भी उनके बीच नियमित जारी था। फिर एक दिन तलाक जैसी सूचना मिली, जिसे बेहद कठोर समझकर उसने स्वीकार कर लिया। यह खबर जब उसके पिताजी को मालूम हुई, अपना सर पीटते हुए अपनी बेटी को अपने यहाँ ले आए।

मायके में शालू हमेशा उदास रहती। एकबार आत्महत्या की असफल कोशिश भी कर चुकी थी, तब से माता-पिता उसका ज्यादा ही ध्यान रखने लगे। हमेशा एक नई जिंदगी जीने के लिए प्रेरित भी करते रहते। ईश्वर की कृपा से सकारात्मक संयोग जल्दी ही मिल गया। एक दिन उनके वकील मित्र उनके यहाँ आए। साथ में उनका अविवाहित भांजा शैलेन्द्र भी था। उनकी आवभगत के क्रम में शालू कई बार आई और वैवाहिक प्रस्ताव का ओर-छोर स्वतः ही खुल गया। शैलेन्द्र को शालू ने बेहिसाब आकर्षित किया। बेपनाह हुस्न की मलिका तो वह थी ही। दोनों के एकांत मिलन की व्यवस्था में शालू झल्लाकर बोली, "क्या सबकुछ जानते हुए भी..." जवाब में शैलेन्द्र भी हां... हां... हां... मैं तुमसे विवाह कर धन्य होना चाहता हूँ। आज शालू-शैलेन्द्र का विवाह हुए करीब आठ वर्ष बीत चुके थे। उनके दो प्यारे-प्यारे बच्चे भी हैं।

बालकनी में बैठे शालू के पूर्व पति देवेंद्र की आँखें झर-झर प्रवाहमान थे। उसे खुद से घृणा सी हो रही थी। अमेरिका में झूठी शान और अकड़ की वजह से वह कितनी बड़ी नादानी कर बैठा था। शालू को तलाक देकर जिस गोरी टेरेसा को वह अपनी पत्नी बना बैठा था उसकी पोल उस दिन खुल गई, जब कार दुर्घटना में उसके पांव काटने की नौबत आई। टेरेसा उसे बेसहारा छोड़कर निकल गयी। सबकुछ लुटाकर वह अपने देश लौट आया। भागलपुर आकर अपने फ्लैट में एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा था।

उसकी लंबी तंद्रा सामने के अपार्टमेंट में पुनः उसी कार के आने पर भंग हुई। कार के रुकते ही शालू उससे निकली और बच्चों के साथ अंदर चली गयी। उसे लगा कि उसके जीवन में अगर शालू अभी भी उसकी पत्नी होती तो पांव कटने की नौबत आने पर भी टेरेसा की तरह अदृश्य नहीं हो गयी होती। सच है कि विवाह अटूट बंधन होता है, कोई क्षणभंगुर कॉन्ट्रैक्ट मात्र नहीं। यही तो फर्क है भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य सभ्यता के बीच। बात यह किसी एक देवेंद्र मात्र की नहीं है, न जाने कितने एन.आर.आई. इस दंश से पीड़ित हैं। घर वापसी ऐसे मामलों में भी होनी चाहिए। यही इसका एकमात्र विकल्प है।

गीत

पिता का प्यार



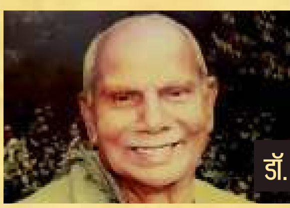
सरयुग पंडित 'सौम्य'
दसुआ, खेसर, बांका -813102
फोन : 9199 515 085

पिता का प्यार, हर दौलत से पार
जीवन, पालन-पोषण, अनुशासन मिला उपहार
पिता का प्यार, हर दौलत से पार।
पिता सृष्टि की अभिव्यक्ति है
पिता से सृष्टि पाती गति है
जहां भी हम आज खड़े, हैं उनके ही अवतार
पिता का प्यार, हर दौलत से पार।
पकड़ अंगुली चलना सिखाया
ठुमुक-ठुमुक जब पांव बढ़ाया
फिर मैं थकता,घोड़ा बन वे, करते मुझे सवार
पिता का प्यार, हर दौलत से पार।
सबसे ऊंची छत है ये अपनी
इनके बराबर, अपनी जननी
छांव में इनकी उड़ पाऊं मैं, नील गगन के पार
पिता का प्यार, हर दौलत से पार।
पूत नहीं वह, इस धरती का
वंश नहीं वह, इस गोदी का
वृद्ध पिता की सेवा से ऊबकर, दे देता फटकार
पिता का प्यार, हर दौलत से पार।
पिता भक्ति है, पिता आराधन
पिता है तीरथ, पिता है दर्शन
रे मन नैना! तुमसे कहना, ये प्रभु रुप साकार
पिता का प्यार, हर दौलत से पार।

धरोहर

माटी की सौंधी गंध से ऊपजी, धूल-कादो से सनी अपने 'घरोहर' की खुशबू, किसी को भी अह्लादित कर देती है। परंतु जिले के पुण्यश्लोक दिवंगत साहित्यकारों के रचनाओं की अनुपलब्धता टीस मारता है। समय रहते जिसे प्रयास के बाबजूद प्राप्त नहीं किया जा सका उसके लिए एक शब्द है 'खेद'? ऐसे में उनका नाम लेकर आगे बढ़ना ही फिलहाल उचित प्रतीत होता है। इनमें पंडित वेणी शंकर शर्मा, सौदागर मांझी, डॉ. अभय कान्त चौधरी, सदानन्द मिश्र 'साहित्यिक सांड़', सुरेश सिंह 'सुमन', श्रीनन्द नन्दन, सुन्दर लाल, मोहन मिलन, चन्द्र किशोर सिंह उर्फ बाबा भारती, रामधारी सिंह 'काव्यतीर्थ', महावीर मधुर, प्रो. हक, प्रो. रामचंद्र राकेश, विमल चन्द्र दास, युसूफ परदेशी, केदार प्रसाद सिंह 'तरुण', राम शर्मा अनल, जगदीश पाठक 'मधुकर' रघुनाथ घोष, अरविंद घोष, उमेश विद्यार्थी, लक्ष्मण यादव 'बेलहरिया', अब्दुल कादिर, परशुराम झा 'प्रखर' आदि।

जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन बांका का प्रयास होगा कि आगे के स्तरीय प्रकाशन में इनकी रचनाओं का संकलन कर प्रकाशित किया जाएगा। फिलहाल कलम के धनी उपरोक्त विद्वानों को सम्मेलन शब्द श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

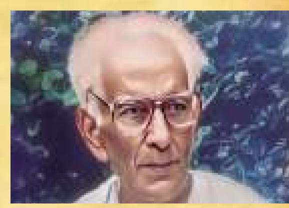


गीत

डॉ. माहेश्वरी सिंह 'महेश'

सूक्तियाँ

घिसकर, छिदकर, तपकर,
पिटकर स्वर्ण-स्वर्ण हो पाता
ज्ञान, शील, गुण और कर्म से
मनुज-मनुज हो पाता।
		चला गया कल
		आने वाले कल का कौन ठिकाना
		आज उपस्थित है
		इसमें ही तुमको पाना।
लघुत्तम कण की शक्ति महत्तम
अब जग जान सका है
भूला स्वयं को पड़ माया में
जब वह मान थका है।
		सज्जन वह जो दुष्टों को भी
		अपना मित्र बना ले
		दुर्जन वह जो मित्रों को भी
		अपना शत्रु करा ले।
श्रम के रस में पगा हुआ कल
फल ही मीठा होता है
कांटों पर चल ही कोई
चोटी पर चढ़ सोता है।



आनंद शंकर माधवन

चित्रशाला

उस चित्रशाला में
अनगिन तस्वीरें हैं सुरक्षित
अनगिनत प्रतिमिमिष
बनाई और मिटायी जा रही
पर दर्शक नहीं एक भी।

पानी बह चुके गंगा के कितने
बहने को बाकी हैं कितने
दृश्य अनगिनत
		उपस्थित करते हुए
फिर उन्हें गायब करते हुए
सूरज कितनी ही बार उग चुका
और कितनी ही बार उगेगा भी
हर बार कोटि-कोटि दृश्य
		उपस्थित करता
फिर उसे गायब करता।
पर गंगा स्थायी है दिखाई दे रही
सूरज स्थायी है दिखाई दे रहा
नभोमंडल और पृथ्वी भी स्थायी है
दिखाई दे रही
निःसंदेह प्रत्येक चित्र से
ऊपज रहे हैं कोटि-कोटि चित्र
और प्रत्येक बीज पर लगे हैं
कोटि- कोटि बीज।

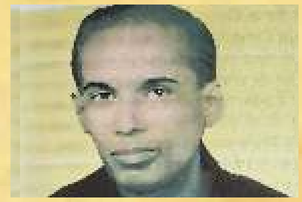


डॉ. गौरी शंकर मिश्र 'द्विजेंद्र'

तू जीत गयी, मैं हार गया

रचनाकाल : 1956

तू जीत गयी, मैं हार गया।
रह गई बसी तेरी कुटिया,
मिट मेरा नव संसार गया।
जीवन के पत्ते पत्ते पर
लिख गये प्रेम के मधु अक्षर,
मृदु सुमन-सुमन पर गूंज उठा
भौरों का कोमल मादक स्वरः
तू रही दृगों से छवि पीती,
मैं लखने छवि-विस्तार गया। तू जीत...
मृदु लहर-लहर पर यौवन के
शशि की मधु किरणें मुस्काईं,
इच्छा की मृदु नस-नस में ली
मदिरा ने अलसित अंगड़ाई
तू मादकता में रही लिपट
मैं चेतनता के पार गया। तू जीत...
आशा के कम्पित अधरों पर
मानस का मधु रस बरस पड़ा,
प्रति विन्दु-विन्दु पर परिछांही
लखने को तारक-वृन्द खड़ा
तुमको वह मीठी नदी,मगर
मुझको बन पारावार गया। तू जीत...
साधना दीप की ज्वाला पर
दिनकर की किरणें बलि जातीं,
वासना-शलभ के जलने पर
स्वर्गिक विभूतियां मदमाती।
वह भस्म भस्म तेरे हित, पर
मेरे हित बन अंगार गया। तू जीत...
जीवन घाटी में तम-प्रकाश-
से स्वप्न-सत्य जब गले मिले,
पीड़ा का घूंघट सरक गया,
मुख देख हर्ष के नयन खिले
तू रही निरखती विस्मित-सी
बह मेरा ह्रदयाधार गया। तू जीत...
जब पारिजात के कानन में
रजनी की अलकें घुंघराली,
भोले प्राणों के हित रचती
ममता की मोहमयी जाली
तू शांत भाव से मौन रही,
पर मैं बन प्रणयोद्गार गया। तू जीत...
मुग्धा कलिका के मानस में
उकसा कर पुलकित मधु व्रीड़ा,
ऊषा प्राणों में भर आती
हिल्लोलमयी जब कल क्रीड़ा,
तू अचल हेरती सस्मित मुख,
यह जीवन बन उपहार गया। तू जीत...



रमाशीष मोदी

युवक उठो

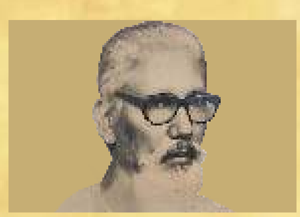
सन 1937 में परतंत्र भारत में रचित

रचनाकाल : 1937

युवक जगो
कड़क उठो
क्रांति करो देश में।।
नहीं मुड़ो
निकल पड़ो
केशरिया वेश में।।
दे दो सिर
कह दो फिर
हूं स्वतंत्र देश में।।
अनाचार
दुराचार
मेट दो निमेष में।।
अचल रहो
नहीं डरो
धर न क्लेश ध्यान में।।
जन्मभूमि
चूमि चूमि
त्याग प्राण शान में।।
लो विचार
इस प्रकार
है तू मृत लोक में।।
मातृ दुःख
देख देख
डूबा क्यों शोक में।।

मधु बरसाता

[डॉ. राधा सिंह से साभार]



विद्या नारायण शास्त्री

आनन तेरा मधु बरसाता!
शांति-सा स्निग्ध
शीतल हिम सा
नव चांदनी-सी छवि बरसाता!
नवनीत-सी सुकोमलता ले
ह्रदयाग्र किरण-सा बन आता!

स्निग्धता में देता विरह नित
शीतलता में ताप जगाता
कौमुदी अंधकार देता
नवनीत कुलिश बन छाता!

जीवन का आलोक प्रहर-सा
लक्ष्य विन्दु-सा घिर-घिर आता
कारक मधुपायी अलि मन-सा
जीवन में आनन्द बसाता!

एकाकीपन सघन तिमिर-सा
ज्यों दर्शन संताप जगाता
मानव का ज्यों आकुल अंतर
विश्व-वेदना घन बन जाता!

गीत

आ गया मधुमास



बैकुण्ठ बिहारी

आ गया मधुमास नवयुग का नया अभियान लेकर!
बहुधा पुरानी केंचुली तज पल्लवों का पट पहनकर
पुष्प-रज सिन्दूर से निज मांग भरकर
डाल अधरों पर नये फूलों की लाली, भाव-अर्घ्य से
है मचलती प्रिय-मिलन का अरमान लेकर
आ गया मधुमास नवयुग का नया अभियान लेकर!
नव मंजरी से सज रही आम्र-डाली
नव इन्द्रधनुषी रंग की तितली निराली
भ्रमर ने नवगीत की कड़ियाँ सजा ली
भर रही वाता-नव मदिरा की प्याली
स्वागत कर रही है नव सुरीली तान लेकर
आ गया मधुमास नवयुग का नया अभियान लेकर!
कंटकों के बीच भी पलभर कली पट खोलती
मधु-सौरभ को लुटा और कुछ है बोलती
'संकटों के बीच रहकर भी हमेशा मुस्कराओ
लोक हित सर्वस्व अपना सबकुछ लुटाओ'
संदेशा है सुनाती विश्व का कल्याण लेकर
आ गया मधुमास नवयुग का नया अभियान लेकर!
तोड़ आया शिशिर की कड़ियाँ पुरानी
कर तरंगित देह में अल्हड़ जवानी
फिर तुम्हारे खून को देकर रवानी
कह रहा संघर्ष की नूतन कहानी
बगुल होठों पर संभाले क्रान्ति का नवगान ले कर
आ गया मधुमास नवयुग का नया अभियान लेकर!

उजाले का सच

[उर्वशी प्रभाकर से साभार]



डॉ. प्रेम प्रभाकर

सृष्टि रच रही हर क्षण
एक नई दुनिया
महसूसा यदि आपने
तो आप भी रच पाएंगे
एक समानान्तर संसार...

कुदरत खुद को बदल रही पल-पल
किंतु हम बौद्धिक यांत्रिकता लिए
दलदल में धँसते जा रहे निरन्तर
अब शहरों में होती नहीं शाम
न होती है रातें
हम घड़ी से जानते हैं
प्रकृति का परिवर्तन
क्या घड़ी दिखला सकती है
सुबह का बिखरता-निखरता रुप?
अरे, यह क्या?
अभी की... शाम का झीना सुरमई रंग
गाढ़ा होने लगा
और अब थक्का-थक्का-जमने भी लगा
पेड़, पर्वत, झोपड़ी, ठूह सब हो गये सम
बिल्कुल वैनेसिंग प्वाइंट की तरह
इन्द्रजाल की काली चादर में
जैसे लिपट गये जमीन-आसमान
अनंत-अखंड!

ज्यों-ज्यों विकास के उजाले बढ़े
उसने लील लिए निसर्ग के नजारे
इन्सान भी होता गया इससे बेदखल
क्या यह ठीक हुआ?
क्या यह गलत हुआ?
मगर इतना जरूर हुआ
कि इन्सान नहीं रहा कुदरत की अमानत
खयानत हुआ! खयानत हुआ!



नरेश जनप्रिय

वक्त की दीवार के
इसपार क्या, उसपार क्या है?
देखना है जिन्दगी में
जीत क्या, हार क्या है?
वक्त को जिसने भी काटा
वक्त उसे है काटता,
साथ चलकर समय के संग
जान ले रफ्तार क्या है
हार है जिनके गले में
यह वक्त की बात है
हारकर फिर जीतने का
सार क्या, अभिसार क्या है
खुद जीयें जीने दें उनको
आत्मवत बढ़ता रहे
बेखुदी में देख लें
शुभ कर्म का संसार क्या है
गर सृजन श्रृंगार होगा
काल भी बंध जाएगा
घुप्प अंधेरे से निकलकर
देख लें भिनसार क्या है!



रामेश्वर झा 'द्विजेन्द्र'

अभिरामा रजनी चली गई

रचनाकाल : 1967

कुछ छोड़ व्योम में चरण-चिह्न
अभिरामा रजनी चली गई।
मधुयामा रजनी चली गई।।

अभिसार अमंगल मूल न था
पीड़क यह सहचर शूल न था
ये शूल-फूल रह गए, किंतु
अभिरामा रजनी चली गई।

अंतर को चंचल विकल छोड़
मधुयामा रजनी चली गई।

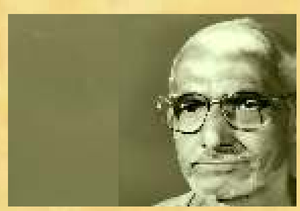
बेसुध था मधुरिम प्यार लिए
निशि का अलसित संसार लिए
बेसुधी बनी रह गई, किंतु
अभिरामा रजनी चली गई।

जग रूचिर अजिर को छोड़, हाय
यह श्यामा रजनी चली गई।

नीरव था, कोकिल बोल गया
मर्मच्छिद विषरस घोल गया
काकली प्रतिध्वनि मुखर हुई
अभिरामा रजनी चली गई।

सविनय आग्रह

बांका जिले के वे साहित्यिक रचनाकार; जो ज्ञात-अज्ञात दिवंगत हैं वे हमारी भी निधि हैं। अगर आपके पास उनकी रचनाएं हैं तो हमें भी स्मरणनार्थ व प्रकाशनार्थ भेजें। हम आपके आभारी रहेंगे।



सुमन सूरो

उदास क्षणों के गीत

रचनाकाल : 1957-58

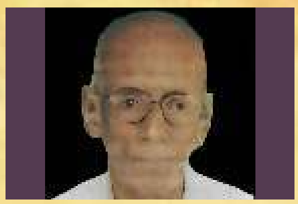
ढल रही संध्या गगन से मूक रजनी आ रही है!
उर विकल करती तिमिर में
उठ रही झंकार कोई
चल रही क्रीड़ा नियति की
क्षितिज के उस पार कोई
जिंदगी का नवलतम अभिनय जगत में चल रहा है
पर पुरानी रागिनी उर-वीण कसती जा रही है!
आज कैसे गीत गाऊं
प्राण जिसमें चिर मुखर हो
वेदना घुटती हृदय की
आज अंबर की लहर हो
भर रहे दृग होंठ हिलते उठ न पाता राग कोई
फट न छाती जाय, कुछ ऐसी विकलता छा रही है।
चल रहा कब से जगत में
पागलों-सा गीत गाता
और कब तक यों चलूंगा
काश! कुछ भी जान पाता
यह न मेरी सांझ, यह तो प्राण की विह्वल घड़ी है
निज व्यथा कहकर युगों से जो मुझे अकुला रही है!

धरोहर

गीत

नव प्रभात

रचनाकाल : 1947



परशुराम मोदी 'दिव्यांशु'

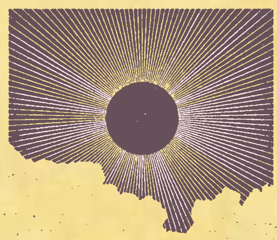
आज प्राची के निकटतम
देख रे जग कौन आया,
भव्य, स्वर्णिम, दिव्यतम
वह रूप किसको है न भाया।

सो रहे हैं व्यथित निद्रा में
जगाने आज आया,
दूर नभ से आज रवि ने
मेरे लिये संदेश लाया।

मूढ़ अब भी चेत जा रे
देख नव प्रभात आया,
प्रात के इस गगन तल में
चेतना की किरण छायी।

वृत्त के नव डंठलों पर
सुखद है, वह कौन गाया,
स्वर मधुर चिर सत्य सुंदर
है सुनाने कौन आया।

लाल सा परदा हटा
जग दिव्य ज्योति प्रकाश पाया,
चिहक चिहुंक कर घोसलों से
खग कुलों ने गीत गाया।



मुक्ति पर्व



प्रो. रामचन्द्र घोष

जीवन का भोग
भोग का जीवन
ठहर गया है
पाकर पड़ाव
श्रम-परिहार कर ले।

इस यात्रा का क्या इतिहास
और क्या भविष्य?
वर्तमान को देख पथिक
पड़ाव है... सुस्ता ले!
क्योंकि चलना है आगे
मंजिल कहीं और है!

कैसा है व्यामोह?
रहस्य या कि क्या?
यात्रा, पड़ाव और मंजिल
सबकुछ कैसा विभ्रम?
सृजन-सुख!
आत्म-भोग!
साधारणीकरण!
कैसे-कैसे निरर्थ शब्द!

ठहर-ठहर पथिक
यह राग है मुक्ति-पर्व का
इसे भी जरा साध!





हिंदी आंदोलन में बांका की भूमिका किसी भी रूप में कम नहीं थी। तब जबकि दक्षिण में हिंदी का विरोध व्यापक था; इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए अखिल भारत प्राणपण से लगा था, तब बांका के बांकुरों का उत्साह भी चरम पर था। हिंदी में यहां के लोग उत्कृष्टतम रचनाएं कर रहे थे।

आज तो बांका और हिंदी एक-दूजे के पूरक हैं। अपने ४५वें वर्ष को पूरा करता बांका के जिला साहित्य सम्मेलन की सक्रियता आज भी इसे समझने को काफी है।

यह 'धरोहर' इन गतिविधियों को आप सबों के समक्ष रखने की जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन, बांका की एक छोटी सी कोशिश मात्र है। यह क्रम आगे भी जारी रहेगा।



डॉ. अश्विनी

चंगेरी, पुनसिया, बांका
मो. : 9304 905 854

कौन खड़ा है देख बावरे प्रेम नहीं तो बोध कहाँ
खूबसूरत कोमल काया जो देह नहीं संबोध कहाँ।
मिथ्या है संसार अगर तो यह इतना खूबसूरत क्यों
खुद में खोजो प्रेम खजाना
इतनी सुंदर मूरत क्यों
पाप कहाँ है पुण्य कहाँ है
सेवा प्रेम तपस्या क्या
प्रेम अचानक से होता है
पूनम औ अमावस्या क्या
प्रेम मतंगी मतबारी जो देह बिना अनुरोध कहाँ।
प्रारब्ध तो शब्द कठिन है
बीज बिना क्या फलता है
कर्म बीज अमृत आराधन
बिन प्रेम सब जलता है
प्रेम सदा ही बो कर देखो
फल अमृत आनंद सदा
प्रेम नहीं तो मधुवन सुना
फूल प्रेम सुगन्ध कथा
मन चंगा कठौत में गंगा प्रेम देख अबोध कहाँ।
शोर में शांति सदा छिपी है
रात के बाद सूरज खिलता
चाँद चकोरी को भी देखो
शून्य में रोज सदा मिलता
देख धरा आधार प्रेम का
अद्भुत लीला बरसाने में
प्रेम तो अपरम्पार है लीला
यह खिलता अनजाने में
वंशी में है मोह मोहिनी बोल प्रेम अवरोध कहाँ।



लोकतंत्र और चुनाव



जय प्रकाश गुप्ता

मंदार विद्यापीठ बौंसी, बांका
मो. : 9934 468 467

लोकतंत्र के अस्पताल में
हर एक चुनाव-योजना के पहले
आता है चुनाव
अपनी संस्कृति का
गर्भपात कराने,
कसमें और वादों के बीच
डॉक्टरों से होती है - वार्ता
सभ्यता के महल में
बनते आचार-संहिता
कि आगामी चुनाव में
विघटन प्रक्रिया के संयोग से
किस तरह जना जाय
नई समस्याओं के अवैध बच्चों को?
और शायद यहीं से शुरू होता है
विकलांग मानसिकता का दौर
जनता को
बेवकूफ़ बनाने का सिलसिला
कभी धर्म के नाम पर
तो कभी ईमान के नाम पर
और यह लंबे अरसे से चला आ रहा
निरंकुशता की आंधी में
बंदूकतंत्र व गुंडातंत्र
और इसके बीच लोकतंत्र का
यह भव्य महल अब ढहने लगा है
और हर कोई तलाशने भी लगा है
अपनी अस्मिता को बचाने
रोटीवाद को जन्मने
समतामूलक समाज को
अपलक निगाहों से निहार
पूरब की लाली को सहेजने।



डॉ. चंदन कु. मधुकर

पड़रिया, शंभुगंज, बांका, बिहार
मो. : 9572 963 570

मेरे भाई! गांधी बनो!
आंधी नहीं!
ब-मुश्किल समय के साथ
आते हैं गांधी
विचरते हैं विस्तृत खुला आकाश
कि छोड़ जाते हैं स्वीकार के शब्द
गांधी एक नाम है
हाड़-मांस के पुतले का नहीं
एक अदृश्य चैतन्य विचार-सत्ता का
पास जिनके है
सत्य व अहिंसा का अजेय सुदर्शन!
कोई लाख दे गालियाँ
कोई सशरीर प्रतिरूप पर
दनादन बरसाये गोलियाँ
या फेंके उन पर कीच, पत्थर
कभी भी लहूलुहान व जलील होकर
मर नहीं जाते हैं गांधी
बल्कि विचार-अमृत की बूंदों से
अमर्त्य महासागर के वृत्त-विस्तार
विश्व-प्राणवायु के निमित्त
दसों दिशाओं में वेगवान हैं गांधी
अखंड आर्यावर्त की पहचान हैं गांधी!



ऐसी भी जिंदगी



अनिल विकल
बनबरसा, खेसर,जिला-बांका
मो.न.-7654 480 607

गांवों-शहरों की गलियों में
जलती-तल्ख धूप की गर्मियों में
हाड़ गलगलाती सर्दियों में
फुफकारती आंधियों में थक-थकाकर
ज्वाला भूख की मिटा नहीं पाती
सारी आकांक्षाएं धरी की धरी रह जाती।
गंदगी की ढेर पर, खुले पांव चलती
फेंकी गई रद्दी में किस्मत है चुनती
दूधमुंहे बच्चे लिए है दर-दर भटकती
दबाये सीने में दर्द का घूंट है पीती
पथराई आंखों से शून्य को निहारती
इतनों पर आजादी का पता नहीं पाती।
रुग्ण चेहरे हैं होठों पे जमी पपड़ियां
बिंदिया न कजरा न कानों में बालियां
कटी-उघरी चमड़ियां व उजड़े हैं केश
सुहागिन है पर अभागिन सा भेष
पसीने से तर नहाती सिंदूर धुल जाती
फिर भी वह नारी भारत की कहलाती।

कर्महारा नहीं



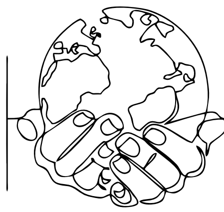
प्रो. सुरेश बिंद
चंगेरी मिर्जापुर, पुनसिया, बांका
मो. : ९१२२ ८९९ ०१२

वक्र-रेखा की तरह
कई-कई उतार-चढ़ाव लिए
अपनी ही नजरों के सामने
जीता रहा हूँ
उबड़-खाबड़ जिन्दगी को...
बचपन में देखे
गरीबी-फटेहाली
खाने-पीने के दिन वे भटरंगे
मिले लफड़े-दर-लफड़े ने भी
बनाया धोखा खाने के काबिल
दबाये रहा सब कुछ सीने से
उन दोस्तों के किस्से-कारनामे
टूटा भी
अपने-आप में कई-कई बार
मगर मर मिटने की चाह में
आज भी जिन्दा हूँ
निज का अस्तित्व लिए
अब मेरी सांसें थमने की बजाय
और तेज चलने लगी है
शायद मैंने
एक निश्चय के साथ
जिन्दगी का जंग जीता है
सुनो! सुनो!
मैं कर्महारा नहीं हूँ।



अंबिका झा 'हनुमान'

विजयनगर, बांका
मो. : 9931 043 574



विश्व युद्ध

मंडरा रहा है बादल विश्व युद्ध का,
कौन किसको मारेगा, कहना कठिन है
युद्ध को रोकना होगा, विश्व को होगा बचाना।
चीन से कोरोना आया,
विश्व में छा गया, त्राहिमाम मचाकर,
इसे रोकना होगा मानव को होगा बचाना।
आतंकवाद, नक्सलवाद फैल गया है दुनिया में
पाकिस्तान-चीन पोष रहा है दुनिया में आतंकवाद
आतंकवाद, नक्सलवाद को भगाना होगा,
विश्व को बचाना होगा।
घुसपैठ कर रहा है भारत सीमा पर, पाकिस्तान-चीन
कर रहा रहा है अशांति, हिंसा का वातावरण उत्पन्न
आतंकवाद, नक्सलवाद को मिटाना होगा,
विश्व को बचाना होगा।
अफगानिस्तान को तबाह कर दिया तालिबान ने,
यूक्रेन-रूस युद्ध भी विश्व युद्ध में परिणत हो रहा
चीन जापान को हड़पने का उपक्रम कर रहा,
विश्व शांति का प्रयास कर रहा है भारत
शान्ति का शंखनाद कर रहा भारत
विश्व को देना होगा भारत का साथ
बचाना है अगर दुनिया को त्राहिमाम से।



आशीष महासागर

देवधा, नगर परिषद, बांका
मो. : 7004 918 792

खतरे में अस्तित्व



सवाल
पूछना चाहती
अबला नारी
समाज के ठेकेदारों
कानून के पहरेदारों
मंत्रियों और संत्रियों से
प्रबुद्ध जनता से, क्या
नारी का अस्तित्व मिट जाएगा?
माँ/बहन/पत्नी बनकर
सुख-दुख में साथ रहकर
जो समाज का निर्माण करती
क्या उसका
अस्तित्व मिट ही जाएगा ?
कभी गर्भ में मार डालते
कभी जिंदा जला देते
रिश्तों को तार-तार कर देते,
मानवता को
उसके अस्तित्व को बचाकर रखो
अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा
जागो और जगाओ!
यदि, अस्तित्व नारी का मिट जाएगा
सभ्यता शर्मसार हो जाएगी
दानवी शेषनाग फण फैलाए
देश को/समाज को
यकीनन हमारे आज को
निगलना चाह रहा
इसे बचाओ/इसे बचाओ!

आवासीय मार्शल एकेडमी

सर्वशिक्षा अभियान
प्रस्वीकृति संख्या
SSA/RTE/BAK
Registration No. :
22513512021816125804
UDISE Code : 102311 03109

सामाजिक संस्था भारती संस्कृति एवं संस्कार निकेतन, खेसर के अंतर्गत संचालित

खेसर, फुल्लीडुमर, बांका
8002 850 364

सेवा के शानदार वर्ष (Celebrating 25 Years Of Success, Since 1999)

सरकारी प्रस्वीकृति

बस सुविधा

सर्वांगीण विकास | समृद्ध पुस्तकालय | भाषाई प्रमुखता | योग्य शिक्षक | सांस्कृतिक नैतिक शिक्षा | कंप्यूटर शिक्षा



बांका जिला कबड्डी संघ, बांका

आएं! बांका जिला को
कबड्डी के क्षेत्र में सिरमौर बनाएं।



भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. कौशल किशोरजी
प्रदेश अध्यक्ष
वैश्य पोद्दार महासभा
पटना, बिहार

डॉ. चंदन मधुकर
जिलाध्यक्ष
वैश्य पोद्दार महासभा, बांका





नाम लिख दिया

मैं धरा हूं तो वो अम्बरा है मेरी
हर फिजाओं पे एक नाम लिख दिया।
इत्र सम खुशबू जब महकने लगी
कोरे कागज़ पे सुबह-शाम लिख दिया।
मैं पतझड़ हूं तो वो वासंती है मेरी।
सूखी पत्तियों पे एक नाम लिख दिया।
धरती की तपिश जब जलाने लगे
अश्क के मोतियों से सुबह-शाम लिख दिया।
मैं अगर बादल हूं तो वो वर्षा है मेरी
सावन की घटाओं पे एक नाम लिख दिया।
बिजलियां रोशनी बन जब चमकने लगे
दरिया की लहरों पे सुबह-शाम लिख दिया।
मैं अगर शरीर हूं तो वो आत्मा है मेरी
दिल की धड़कनों ने एक नाम लिख दिया।
जब सांसों की सिसकियों के हवाले हुए
मुकद्दर की लकीरों ने सुबह-शाम लिख दिया।



जयकृष्ण पासवान
सहायक शिक्षक
उच्च विद्यालय बभनगामा, बाराहाट, बांका
मो. : 7549 841 125



आत्मविश्वास



ज्योति मिश्रा
ओड़हारा, रजौन, बांका
मो. : 9534 547 555

ये मेरी लड़ाई है, मुझे लड़नी है
मैं लड़के दिखाउंगी।
ये मेरी पढ़ाई है, मुझे पढ़नी है
मैं पढ़ के दिखाउंगी।
ये मेरी आजमाईश है,
मुझे आजमानी है
मैं आजमा के दिखाउंगी।
ये मेरी जिंदगी है, मुझे जीनी है
मैं जी के दिखाउंगी
जी के सिखाउंगी।
दौर है गुजर जाएगा
वक्त है निकल जाएगा
रूप है निखर जाएगा
मन है संभल जाएगा
शाम है ढल जाएगी
मोह है छूट जाएगा
घाव है भर जाएगा
जिंदगी है संवर जाएगी।





लेडिज फर्स्ट



डॉ. श्वेता

अंग भारत, मिलन कॉम्पलेक्स
आजाद चौक, बांका
मो. : 9431 695 627

ये जो 'लेडिज़ फर्स्ट'
कहा करते हो,
ये 'दो शब्द' हमारे हृदय को
छूआ करती हैं!
कभी शूल बन चुभ जाती है,
तुम्हारी हम पर
सहानुभूति बन कर!
तो कभी सूकून देता है,
ये सम्मान पा कर!
खैर....,तुम पुरुषों की,
जो भी मनसा रही हो ,
इन 'दो शब्दों' को लेकर...
पर, हम
नाजुक स्त्रियाँ
इसे सहर्ष स्वीकारतीं हैं!
जो हमारी जिंदगी को बहुत
आसान कर देती हैं!
संतुष्ट कर देती हैं,
समय-समय पर उपेक्षित
इस अंतर्मन को भी...
तो सुनो न!
एक अनुग्रह की आग्रह
और भी है हम स्त्रियों का,
तुम पुरुषों से!
ये सम्मान बनाए रखना,
जीवनपर्यंत एवं जीवनोत्तर भी!
अपनी सहानुभूति और सम्मान
दोनों ही हमारे आँचल में भर देना,
चूड़ी, गज़रा, बिंदिया, कंगना
पैरों में महावर, माँग में
सुर्ख सिन्दूरी अनमोल गहना,
सब हमको तुम पहना देना!
रोमांचित कर देगी,
हमारे शिथिल, आत्मा से
भिन्न पड़े शरीर को भी
वो छुअन तुम्हारी!
चला चली की बेला में
हमें आगे जाने देना!
दुनिया से रुख़सत के वक्त भी
तुम ये 'लेडिज फर्स्ट' निभा देना!!

लघुकथा



अनिरुद्ध प्रसाद विमल

संपादक : समय, अंगधात्री
पुनसिया,बाँका, बिहार
मो. : 9934 468 342

पिशाच कथा

काफी लंबे अंतराल से प्रेतघाटी में वृक्ष की शाखा से उल्टा लटका पिशाच यातना पूर्ण जीवन जी रहा था। वह ईश्वर से पुनः मानव योनि प्राप्त करने की प्रार्थना कर रहा था। ईश्वर प्रसन्न हुए। उस पिशाच ने ईश्वर से कहा- ''ठीक है, जाओ अपने इसी रूप में धरती पर। एक बार भ्रमण कर देख लो, फिर जैसा कहोगे वैसा ही करूँगा।''

पिशाच सारी पृथ्वी पर घूमने लगा। वह सबको देखता था। हर चीज अनुभव करता था। आदमी के लिए वह अदृश्य था। सारी दुनिया घूम कर वह भारत आया। भारत उसका प्यारा देश था। पूर्व जन्म ही भारत में ही हुआ था। तब गुलामी के दिन थे। अब वह आजाद भारत का भ्रमण कर रहा था। मूल्यहीनता का शिकार तो सम्पूर्ण विश्व ही था लेकिन भारत की हालत सबसे बदतर थी। नेता अपने को जनसेवक कहकर मालिक बन बैठा था।

पिशाच बड़बड़ाया- ''जनता जिसे चुनकर भेजती है, वही उसका शोषण करने लग जाता है। जनता असहाय भ्रष्टाचार, लूट, घोटाले में लिप्त धनकुबेरों को चुनने के लिए विवश होती है। देश की चिंता किसी को नहीं है। सरकारें वोट बैंक बनाने के लिए सरकारी कोष को दोनों हाथों से लुटाने में लगे हैं। मध्य वर्ग जिसमें किसान भी आते हैं, अभाव की जिंदगी जी रहे हैं। हत्या, बलात्कार, फिरौती, नारी उत्पीड़न आम बात है।''

सबसे बड़ी बात, पिशाच को कोई ऐसा नहीं दिखा जो स्वार्थ के वशीभूत नहीं है। पंचायत से संसद तक सभी लूट रहे हैं। वोट बेचे-खरीदे जा रहे हैं। जनता भी जब भ्रष्ट हो तो देश और माटी को कौन बचाएगा?''

पिशाच दुखी मन आकर ईश्वर के आगे खड़ा हो गया। ईश्वर ने पिशाच से पूछा- ''बहुत शीघ्र आ गए पिशाच? अपना निर्णय कहो।''

''मुझे मनुष्य जन्म नहीं लेना प्रभु। मैं पिशाच हूँ, मुझे पिशाच ही रहने दें।'' ❁

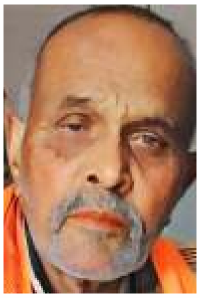
जिन्दगी और अगरबत्ती



डॉ. आलोक प्रेमी
मदरिया, अमरपुर, बांका
मो. : 9504 523 693

ये जिन्दगी
एक जलती हुई अगरबत्ती है
और हम सांस
पल-पल गिरती हुई राख
समय की आँधी
जितनी तेज होती है
यह अगरबत्ती
उतनी ही जल्दी
बुझ जाती है
पर ये सच है
कि प्रतिकूल परिस्थितियों की
इस आँधी से
संघर्ष करते हुए
अगरबत्ती को मिलता है
सौभाग्य,
अपनी सुगंध को
दूर तक बिखेर पाने का।

छोटी-सी लौ



खुशी लाल मंजर
चंगेरी, पुनसिया, बांका
मो. -9709 794 445



अरे! अंधेरे का जवाब हूँ मैं
खुद को जलाकर
अखण्ड को रोशन करना
युग-धर्म रहा है मेरा!
खुद में खुद को सिमटा देने
जैसा अधर्म नहीं समझता मैं
और तभी शायद
हर संभव अपने-पराये का फासला
पाटना चाहता हूँ
अपनी तमाम खुशियाँ लुटाकर!
नहीं चाहता किन्हीं को
निज के दुःख में शामिल करना
दुःख तो मेरे जीवन का अनिवार्य हिस्सा है
मैंने आंधियों के थपेड़े सहे हैं असहज
भींगा हूँ बरसात में ठहर
रात-रात भर ठिठुरा हूँ पूस-माघ में
फिर भी अनवरत देता हूँ रोशनी
आगे भी दूंगा अपनी 'खुशी' के लिए!
मेरे पास कुछ और है भी क्या?
मैं तो एक छोटी-सी लौ हूँ
खुद को तपाने के लिए।

श्रद्धांजलि

न्यायमूर्ति भगवती प्रसाद झा

मुख्य न्यायाधीश : पटना उच्च न्यायालय

02 जनवरी 1925 - 29 फरवरी 1992

जन्म स्थान : धौरी राजपुर, बांका





विनीत

अधिवक्ता मदन प्रसाद झा
व डॉ. अनीता झा
(कनिष्ठ पुत्र व पुत्रवधू)
अधिवक्ता - पटना उच्च न्यायालय

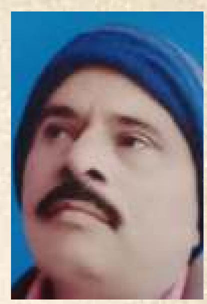
प्रेसिडेंट्स रूम, दरभंगा हाउस, एडवोकेट एसोसिएशन, पटना हाई कोर्ट, पटना
संपर्क : 9430 035 026, 7488 881 253

दोहे

किसान

पोर-पोर है दुःख भरा, पोर-पोर संत्रास।
सिर्फ भरोसे ईश के, है कृषकों की आस।।
कादो, कीचड़, धूप में, कृषक खटे दिन-रात।
फिर भी उसके भाग में, सूखी रोटी भात।।
फटी बिबाई पाँव में, सूखे सारे खेत।
कृषक भाग में रह गया, बस मुट्ठी भर रेत।।
कृषक करे जिस देश में, क्रंदन हाहाकार।
समझो उस देश को, लूट रही सरकार।।
हल्कू खेती छोड़कर, भाग गया परदेश।
झुनिया रोई रातभर, यही कृषक का देश।।
सस्ता जीवन मूल्य है, सूना जीवन रंग।
कृषकों की है जिन्दगी, जैसे कटी पतंग।।
वर्षा-आँधी का कृषक, सहते हैं उत्पात।
पत्थर, ओला भी सहे, ठनके का आघात।।
सपना-सपना ही रहा, टूट गई सब आस।
आज साथ कोई नहीं, हलधर हुआ उदास।।
समय कृषक के साथ हो, नाचे भर उत्साह।
बेटी हुई जवान है, करना उसका ब्याह।।
कृषक आज है जी रहा, समय बीच मंझधार।
उसके जीवन नाव की, डूब रही पतवार।।





कुमार संभव
चंगेरी मिर्जापुर, बांका, बिहार-813109
मो.-8002 812 067

सामर्थ्य कहां



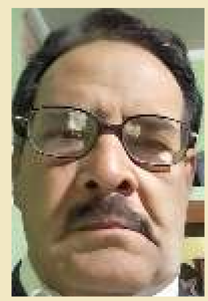
आशीष कु. सागर
दुधारी, बांका
मो. : ९७०९ ९३० २६९

शब्दों में सामर्थ्य कहां
मनोभाव का अर्थ कहे
निःशब्द जुबां
चेहरा सपाट
आंखों से जो तुम कहते
बस आंखों से ही उसे सुनता
महसूस हुई जो बातें
कोई तो उसका अर्थ कहे
टकटकी बिन पलक झपके
झील सी गहरी आंखों में
देखता रहता हूं
हिलकोरों की अधर कथा
कोई पूछे तो कैसे कह दूं
कोई बात नहीं
चैन से मैं सो पाया कभी
ऐसी कोई रात नहीं
शब्दों में तासीर कहां जो
जागी रातों का अर्थ कहे

मतवाली गुलाबी आंखों में
जो कुछ भी दिखा
रंगों की भाषा में लिखा
शब्दों में सामर्थ्य कहां
जो इन रंगों का अर्थ कहे।



डगर हूँ



शिव कुमार 'शिव'
बाबूटोला, बांका
मो. : ९४७२ ४३९ ६६३

डगर हूँ डगर!
ना है, मुझको खबर!
मैं जाऊँ किधर?
चला जाता उधर
लोग ले जाते जिधर
डगर हूँ डगर!

हिन्दु, मुस्लिम व
सिक्ख, इसाई चले
राजा, रंक व कसाई चले
ना पूछता वो किसी से
कौन चलता है मुझपर!
डगर हूँ डगर!

मैं जोड़ता सभी को
गाँव से शहर
शहर से नगर
नगर से महानगर
डगर हूँ डगर!

नदी नालों पर
जंगल पहाड़ों पर
न है मुझको डर
आगे न तुझसे चला कोई
कभी न होता हूं खत्म
जो होता हूं खत्म तो
रूक जाता है
जीवन का सफर
डगर हूं डगर।



उज्ज्वल किरण



मुसीबतों के सर को
हम मसल-मसल मुस्कायेंगे,
ले मशाल उज्ज्वल किरण का
चलें हैं चलते जायेंगे...
अभय हमारे रक्त-कणों में
अमृतवाणी मधुर मनों में,
सत्यम साथ स्नेहम् संग में
आनन्दित मन हरेक क्षणों में,
आलोकित पथ पर अर्पित तन
अमन-गीत दुहरायेंगे...
हक के लिए लड़ेंगे दमभर
निकल पड़ा कारवां सफर पर,
पथ के रोड़े स्वतः हटेंगे
संकल्पी मन देख-देख कर,
हिम्मत और मेहनत की भाषा
जन-जन को सिखलायेंगे...
ज्ञानदीप से जग को सजाकर
जन-जन का पुरूषार्थ जगाकर,
प्रेम और निष्ठा से 'प्रेमी'
हर घर का अंधकार मिटाकर,
अरुण गगन पर अपनी जीत का
अटल-ध्वजा फहरायेंगे!

परमानंद प्रेमी
भदरिया, अमरपुर, बांका
मो. : 9939 694 263

गिद्ध महोत्सव



अंशु माला झा 'अंश'
बेलडीहा, धोरैया, बांका
मो.-9771 241 747

जीवन की आपा-धापी में
हम आ गए कहाँ से कहाँ?
हर उस मूलक-सत्य को छोड़
गिरवी रख आत्मा को
कर मानवता को शर्मसार
कर गए सभ्यता-संस्कृति को हलाक

चकाचौंध में ढोते रहे हम
स्वार्थ की गठरी
इर्द-गिर्द करते रहे अनदेखा
हर एक सांस पर उठाते रहे बोझ
लाचारी, बेबसी-लधी दुनिया का

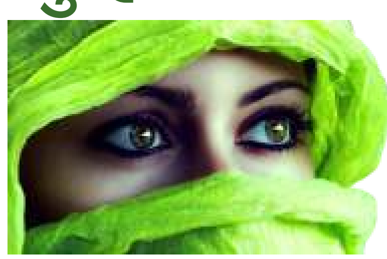
धरा के अस्तित्व को हमने
चाहा बार-बार मिटाना
गिद्ध-महोत्सव को चमकाना भी
लाशों के अंबार से उपकृत होना
संवेदना को शून्यता के शिखर ले जाना

हम दैत्यावृत्ति को क्या डाल पायेंगे
हवन-कुंड में करने उसे राख
मंगल ध्वनि-गायन से क्या
सुरक्षित रख पायेंगे सृष्टि
अपनी ही भूल पर क्या दे पायेंगे
स्व की संभावना को विस्तार?

तुम्हारी आंखें



राजीव रंजन सिन्हा
सोहानी, मोरामा, बांका-813 107
मो.-7779 845 397



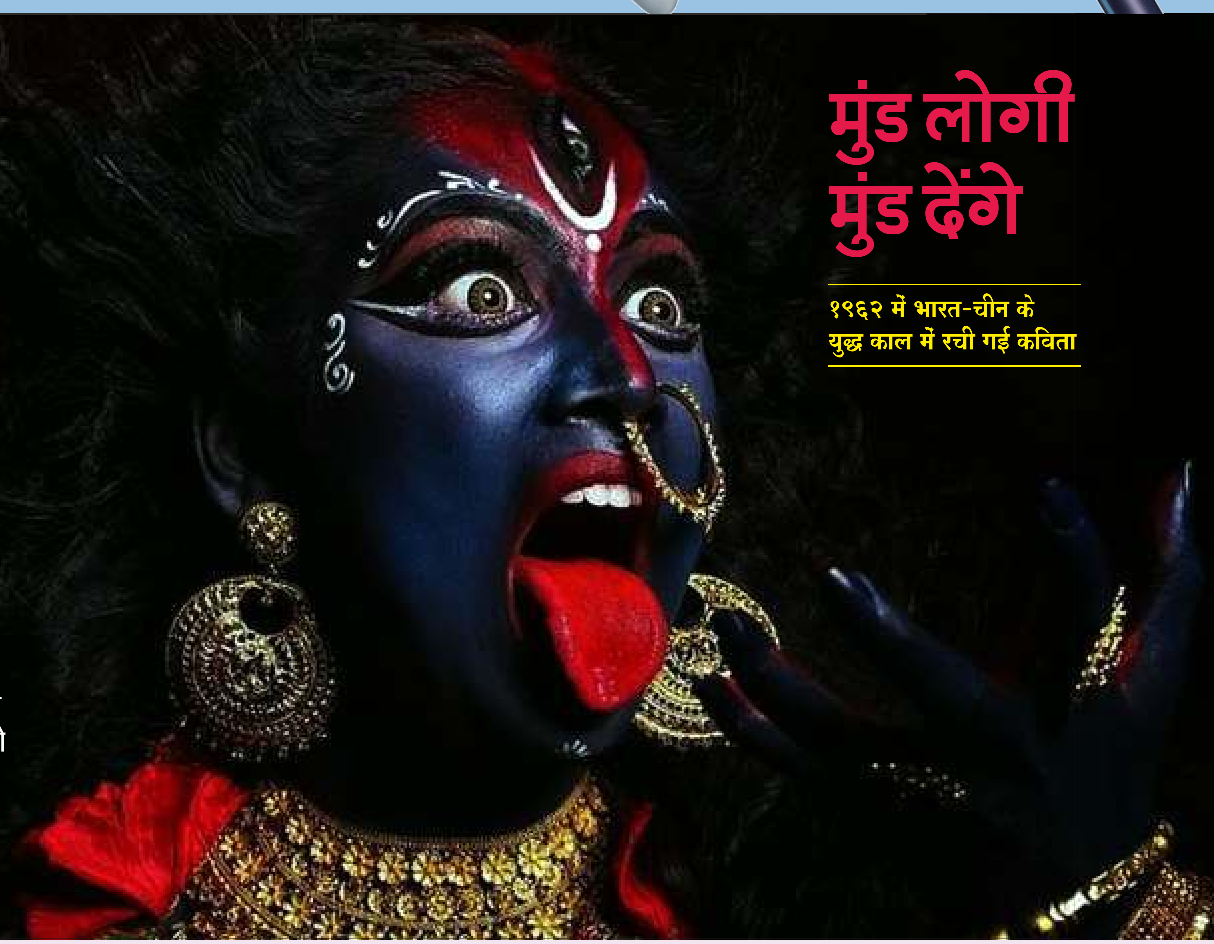
तुम्हारी आखों का आकाश
स्वच्छ सुन्दर सा उल्लास
क्षितिज से निःसृत जैसे
उषा का विलास

विस्तृत नभ का
खुला परवाज़
उड़ लिया खूब
बनकर एक परिंदा
सतरंगी पंख पसार
मगर ढूँढ न पाया
ठौर-ठिकाना
चैन व करार

एक दिन उमड़ा
वो घना-सा बादल
दृग-पृष्ठों का धुल गया
सुन्दर-सा काजल
कि स्वच्छ था अब आकाश
खिल उठा था इन्द्रधनुष
मगर तनी थी प्रत्यंचा
और सामने था केवल
एक अधीर मनुष!



प्राण मोहन 'प्राण'
बौंसी, बांका



मुंड लोगी मुंड देंगे

१९६२ में भारत-चीन के युद्ध काल में रची गई कविता

मुंड लोगी, मुंड देंगे
एक-दो की बात क्या माँ
झुण्ड के ही झुण्ड देंगे
मुंड लोगी, मुंड देंगे

नाप लेंगे खाइयों से शिखर को
एक इंगित पर उसे हम पाट देंगे
एक क्या लाखों-करोड़ों कुंड देंगे
मुंड लोगी, मुंड देंगे ...

◆ 'तूर्यनाद' से
प्रकाशन वर्ष -1963

आओ परदेशी



सुंदर सघन घर पीपल के छांव रे
आओ परदेशी अब आओ मेरा गांव रे।
संग-संग सूरज के झूमे हरियाली
चंचल चंदनिया होके मतवाली
चहकते चिरैया मगन डाली-डाली
मस्ती से मनती है होली-दीवाली
रखती धूप पगडंडियों पे पांव रे...
सिमट गया आंगन के कोने में पनघट
सर से सरक रहा सजनी का घूंघट
बरगद की छाया में लगता है जमघट
बदले विचारों ने कितने ही करवट
आज भी लोक रीत गीत से जुड़ाव रे...
गुम गई दादी नानी की कहानी
देखे दूरदर्शन में नई जिंदगानी
प्रकृति के संग करती है मनमानी
लगती है पुरखों की बातें पुरानी
शब्द पुत्र बांट रहे गीत हर ठांव रे...
तन-मन भी आतुर है बनने को शहरी
जीवन छोड़ रही सभ्यता की देहरी
स्वार्थ की नदिया भी हो रही गहरी
साधे है मौन सब संस्कृति के प्रहरी
पूरबा के आंगन में पछिया के पांव रे...
बैलों के साथ नहीं दिख रहा किसान है
खेतों खलिहानों में बसता विज्ञान है
महक रहा शिक्षा का सुंदर उद्यान है
पंचायती राज अब गांव की पहचान है
विमल 'विकास' ने पसारा है पांव रे।



विकास सिंह 'गुल्टी'
अठमाहा, शंभूगंज, बांका
मो. : 9934 827 978

स्त्रियों का स्थान



सुधा चौरसिया
बांका, बिहार
मो. : 9304 595 192

भगवान के निर्माताओं ने
कैसा षड्यंत्र किया है

लक्ष्मी विष्णु के पाँव दबाती
दिखाई गयी है
पर कभी
लक्ष्मी के पाँव दबाते
विष्णु नहीं दिखे

क्या लक्ष्मी के पाँव में
कभी दर्द नहीं हुआ होगा...।

तवा गर्म है

तवा गर्म है
बच्चों की चुन लाई
लकड़ियों से,
बच्चे घेरे बैठे हैं
चूल्हे को,
पर पापा
गई रात भी न आये,
बच्चे ऊंघते
लुढ़क गये आस-पास,
माँ के इन्तजार की
पथराई आँखों में,
रात का सूनापन
और बच्चों की भूख
समाती रही,
सुबह किसी ने खबर की
रोहिण के पापा
बेहोश पड़े हैं,
सड़क किनारे
कचरे की ढेर पर,
लोगों ने पीटा है उसे
बिना कीमत दिये
दुकानदार से आटा ले
भागने के जुर्म में,
गिड़गिड़ाया था बहुत
उधार के लिये
पर दुकानदार न माना था।



डॉ. गिरिजा शंकर मोदी
अलीगंज, बांका
मो. : 6299 550 424



अरुण कुमार सिन्हा
अलीगंज, बांका
मो. 6299 525 868

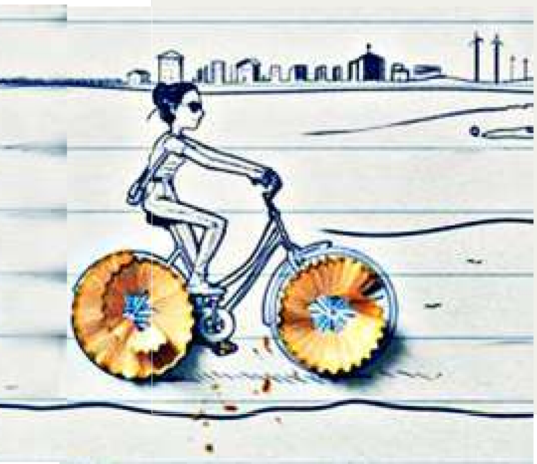
बेटी

बेटियाँ साक्षात गृह-लक्ष्मी
ओलती-आंगन की अवतार!
सारस्वत का विपुल भंडार!
और भी बहुत-कुछ
या कि सब-कुछ...

उससे होता ही रहता
भावों का मर्मस्पर्शी संचार!
बहुत-कुछ कर गुजरने की
लेकर तमन्ना
कि चाहत लिए
छू लेने चांद को।

देखते-देखते
आ जाता
मेंहदी का मौसम
अबतक रही न जिसकी
कभी कोई मांग
भर देती कुदरत उसे
लालियों से
मानो पट गया हो खेत
धान की सुनहरी बालियों से

और फिर
एक दिन डबडबाई आंखें
कर देती उसे विदा
या कि घर से हो जाती वो जुदा
...तब भी
बेटी पर
हम सब हैं फिदा!



ऐ सड़क



राजेश कु. रंजन
अचारज, बौंसी, बांका - 813 104
मो. : 7209 495 321

अतिशय देर हो गई
ओह! तुम्हारे गांव पहुंचते
नापते-नापते डगर,
हम चल दिये
तुम्हें देखने नगर।
देखे हमने यहां
चुनिंदा पेड़ों की छांव के साथ
तुम्हें चकाचक,
और थोड़ी तड़क-भड़क
ऐ सड़क!
सुना है कि
पहाड़ों के पहाड़
निगल गई हो तुम,
कोलतार के साथ
फिर तैयार हुई हो तुम।
यह भी सुना कि
पगडंडियों के समय के आश्रयदाता
आने से पहले तुम्हारे, वे वन गए
जहां सुस्ता लेता था पथिक
वहां बस-स्टैंड के शामियाने तन गए।
कानोंकान हवा बही थी कि
निर्माण में इसके
पैसे रूपयों के साथ खूब बहे,
छांकने वालों ने छांके
चारणों ने 'क्या खूब' कहे।
क्षुधा जुल्म करने लगी अब
बता कहां बुझे, किस बाट लूं,
सुनते पक गए हैं कान
कि अतिशय मालदार हो तुम
तो... आ तुम्हें ही चाट लूं!


neu
Detergent Range
Bringing a Sparkle of Nature to Your Laundry
BREAKTHROUGH INNOVATION
ECO FRIENDLY
Available at amazon
Flipkart
Mart
For more info visit:
www.cianindustries.com


बिहार सरकार से प्राप्त पंजीयन संख्या :
225102021927095935
ज्ञान गंगा
आवासीय बाल विद्यालय
ईदगाह रोड, बाबूटोला, बांका
कक्षा नर्सरी से 8 तक मान्यता प्राप्त
नवोदय, नेतरहाट व सैनिक स्कूल में प्रवेश हेतु विश्वसनीय तैयारी
प्रधानाध्यापक
श्री निवासचन्द्र श्री
9934 831 312
ज्ञान गंगा आवासीय बाल विद्यालय



ओ सुनो



संजीव शर्मा
बांका, बिहार
मो. : 9006 274 313

ईश्वर से मांगी है
सिर्फ तुम्हारी खुशी
सुनो सिर्फ तुमसे साझा कर रहा
ये एक राज की बात है
मेरी दुआओं का
मुक़म्मल होना
और तुम्हारा मुस्कुराना
एक ही बात है..
खुबसूरत गुलाबी सुबह
तुम्हारी प्यारी मुस्कान
और तुम्हारी उदासी
मानो अमावस की रात है
खामोश लब और
बोलती आँखें
चेहरे की चमक
जैसे पूनम की रात है
मुस्कुराती रहना यूँ ही
हर सावन हर जेठ
कबूल होती रहे मेरी दुआ
लगेगा ईश्वर मेरे साथ है।

गजल

इंसाफ बड़ा सस्ता बिका क्या ठीक हुआ
अपराध बगैर मिली सज़ा क्या ठीक हुआ

धोखाधड़ी घोटाले कत्ल-गारत छिनतई
अखबार में बस यही कुछ छपा क्या ठीक हुआ

अपनी तकलीफ का हल नहीं कर सकते मगर
तेरे दुख पर मैं ख़ुश हुआ क्या ठीक हुआ

यूं मानती दुनिया बुरे हैं बेहद हम
बनता नहीं क्यों फिर भला क्या ठीक हुआ

देखेंगे कभी लाचारी के दिन हम भी
अहसास नहीं अहसास का क्या ठीक हुआ

समन्दर वहीं था और इंसा भी वहीं थे
सबको नहीं मोती मिल सका क्या ठीक हुआ

मिलने को जमीनो आसमान मिले हमें
करते रहना मेरा गिला क्या ठीक हुआ?



इज़हार अशरफ
रुमी स्टोर, बौंसी, बांका
मो. : 7992 360 378

अंधेरे का सेनानी

थोड़ी देर में
सूरज डूब जाएगा समंदर में
यह दुनिया सो जाएगी
एक पंछी की प्रतीक्षा
हो जाएगी खत्म अब
वह जाग जाएगा
और निकल पड़ेगा
अपनी मंजिल की ओर
थोड़ा इतरा कर शायद
ठीक एक सैनानी की तरह
निकला वह अकेला
इस अंधेरी दुनिया में
चमकते हुए चांद को छूने
सितारों को अपनी चोंच से चुगने
लेकिन अनेक प्रयत्नों के बाद भी
उसे मालूम कि
वह ऐसा कर नहीं पाएगा
और थक कर
किसी पेड़ की डाली पर बैठेगा
रुक कर सांस लेगा
दूर समंदर में निरंतर झांकने की कोशिश में
अरुणिम सूरज की झलक देखने से पहले
उसकी दुनिया खत्म हो जाएगी
लेकिन वो हारेगा नहीं
फिर नई उम्मीदों के साथ
प्रतीक्षा की नींद में खो जाएगा
उस घड़ी के लिए जिसमें वह
कुछ वक्त का शहंशाह होगा।



सोमकृष्ण
अमरपुर रोड, बाबूटोला, बांका
मो. : 9852 241 318

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।



जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 45वें
स्थापना-वर्ष की उपलब्धि विशेष पर,
पूज्य पिताश्री

स्व. सहदेव प्रसाद सिंह

भूतपूर्व मुखिया, मोरामा- वनगाँव पंचायत, रजौन, बांका

को सपरिवार श्रद्धांजलि अर्पित करते,
उनकी कारयित्री प्रतिभा-दक्षता को स्मरण करते,
उनके दिव्यालोकित पथगा से गुजरते,
तमाम जिलावासियों को अशेष शुभकामनाएँ।



सौजन्य

डॉ. अमरेन्द्र नारायण सिंह
कृषि- वैज्ञानिक, लखनऊ
ग्राम+ पोस्ट - मोरामा, रजौन, बांका -813 107

दूरभाष -9839 459 039



नवल किशोर पंडित
ग्राम+पो. - धरमडीहा, बांका
मो. 8809965272

शिक्षा



जीवन में है शिक्षा महान!
जिनसे मिलता है सम्मान!

गुरुजनों की कृपा अपार!
बढ़ें शिष्या-शिष्य चमत्कार!
गुरू देते ऐसा वरदान!
शीश नवाता सारा जहान!
जीवन में है शिक्षा महान!
जिनसे है मिलता सम्मान!

बिन शिक्षा सबकुछ वेकार!
शिक्षा लाये सुध-सम्हार!
सब ज्ञान का शिक्षा भंडार!
अनमोल धरोहर शिक्षा सार!
शिक्षा गुण-अमृत की खान!
जगत शिक्षा से पाये त्राण!

जीवन में है शिक्षा महान !
जिनसे है मिलता सम्मान!



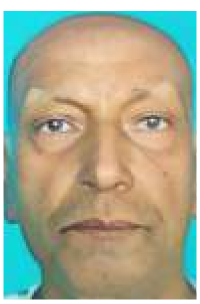
प्रिया सुहानी
C/o : मुनेश्वर
सोहानी, रजौन, बांका -813107
मो. -7494001672

सवालों से घिरे सवाल



इधर गली में
आते-जाते लोग
किसी की नहीं सुनते
एक-दूसरे से
ऊंची आवाज में करते हैं बातें
एक-दूसरे पर
उछालते हैं कीचड़।

सभी वे मशगूल हैं
अपने-आप में
और मैं जब-तब
गली से गुजरती
पढ़ती हूँ
उन चेहरों को
शायद स्वयं में
सवालों से घिरे
और कितने-कितने ही
सवाल पाती हूँ!



अनूप
बगडुम्बा, बौंसी, बांका
मो. : 6205 187 659



ईमान का इजलास

अन्तर्वेदना : मुझे निरंतर
काटते हुए
एक के बाद दूसरे अंधेरे में
छोड़ देती है।
कहकहा भी न पाई
कि नगरपालिका की नालियों की
सड़ांध की तरह
छोड़ने लगी दुर्गंध
वरना
सुनाता अवश्य
अपना शाश्वत छंद।
अब मुजरिम सा खड़ा हूं
लेकर फरियाद
परंतु
जाऊं किनके पास
लेकर कौन सी आस
चूंकि यहां सौंदर्य, ऐश्वर्य
और जवानी के
जिज्ञासु इंसान ने उठा दिया है,
ईमान का इजलास
और दौलत की मांद में
आंख मूंदकर बैठे हैं
नीति और न्याय के प्रवक्ता
मौसमी ध्यान में।



प्रो. रामनरेश भगत
आनंद कॉलोनी, बांका

कवि वह अमर गान सुना दो

कवि वह अमर गान सुना दो
शब्द सुधा सा अर्थ उज्ज्वल हो
लय रसमय स्वर पंचम में
मधुमय कोई गान सुना दो
कवि वह अमर गान सुना दो
कवि प्राणों में प्राण बसा दो
धड़कन दिल की रागमयी हो
सांस लिए छंदों का हार
छेड़ राग ऐसा ही कोई
सुख प्राणों में सरसा दो
कवि प्राणों में प्राण बसा दो
कवि नैसर्गिक रूप दिखा दो
तुम्हीं मनीषी सत्य स्रष्टा
सपनों के सर्जक सुकुमार
कवि मनीषी परिभू स्वयंभू
तथ्यों को आकार दिला दो
कवि नैसर्गिक रूप दिखा दो
जहां तहां वर्तमान रहो तुम
कांटों में मुस्काए कलियां
पत्थर के सीने में सज दो
संगीतों की सुंदर लड़ियां
चाह यही इतनी ही अपनी
मुस्कानों से भर दो घड़ियां
समय साक्ष्य प्रमाण रहो तुम
जहां तहां वर्तमान रहो तुम।



चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप'

बाबू टोला, बांका

मो. : 6२0२ 907 87२, 9431 589 546

इंद्रधनुष हो जाऊं

प्रिय आओ एक रात तुम्हारे सपनों में खो जाऊं।
और रातभर तुम मेरे और मैं तेरी हो जाऊं ।1।
आंखों में आकाश सजा लूं
भर लूं बांहों में बादल,
चलो ढूंढने में कस्तूरी
खुद को कर लें पागल,
जी करता है चांद पे रख के माथा मैं सो जाऊं ।2।
ऋतु बसंत सांसों में घोलें
प्राणों में जीवन की डोर,
पंख लगा उड़ जाएं - छू लें
विस्तृत नीले-नभ के छोर,
चुपके से कुछ रंग चुरा लूं इंद्रधनुष हो जाऊं ।3।
मौसम आए-मौसम जाए
युग बीते-पल छिन में,
रात को सूरज चमके अंगना
चंदा दम दम दमके दिन में,
प्यार से महके घर-सपनों का सुंदर एक सजाऊं ।4।
तुम्हें बिठाकर पलकों पर मैं रात-रातभर जागूं,
रंगीन-तितलियों के पीछे
मैं साथ तुम्हारे भागूं,
सांसों की लय पर इठलाकर गीत कोई मैं गाऊं।5।
और रातभर तुम मेरे और मैं तेरी हो जाऊं।।





राजेश कुमार

थाना प्रभारी (विशेष)
बेलहर, बांका
मो.- 9939 636 166

महादेवी की महानता

मध्य रात्रि का समय रहा होगा। गश्ती-दल चौकस रहकर, रात्रि के सन्नाटे को चीर, किसी अनहोनी के शब्दों को पकड़ने में लगी थी। एकाएक किसी बच्चे की रोने की आवाज़ सामने आयी, शायद झाड़ी की तरफ से। आखिर गश्ती-दल ने उसे ढूँढ निकाला। संभवतः किसी ने नवजात बच्ची को नाजायज मान, अंधेरे का लाभ उठाते उसे पहाड़ी की तरफ झाड़ी में फेंक दिया था।

पुलिस उस निर्दोष बच्ची को लेकर शिनाख्त के लिए पास के गाँव पहुँची थी, उसके मुतल्लिक कोई जानकारी नहीं मिली। उस अज्ञात निर्मम माँ का कलेजा कहीं से भी पसीजता नजर नहीं आया। पुलिस निराश होकर लौटने ही वाली थी, खुद के गले में घंटी बांधकर। तभी अचानक ममता की एक मूरत सामने आई और बोल उठी, ''भगवान का प्रसाद समझकर, इस बच्ची को मुझे दे-दो साहेब जी! दो बच्चों के बीच एक बच्ची भी सही, कमा-कोड़ कर पाल लूंगी इसे। मैं विधवा-मजदूरन जरूर हूँ पर विधाता के खेल से मजाक होता नहीं देख सकती'' और बढ़कर उस बच्ची को गोद में संभाल लिया। कानूनी शर्तनामे को भी उसने सहजता से स्वीकार कर लिया।

यह सब देख गश्ती-दल अवाक रह गयी थी। हम पुलिस वालों का उस विधवा-मजदूरन से कुछ ही समय के लिए परिचय हुआ था मगर उस 'महादेवी की महानता' के समक्ष सभी खुद को बौने महसूस कर रहे थे। ❁





कौशल कुमार सिंह
शंभुगंज, बाँका
मो. : 8521 095 962

पिता
पथ-प्रदर्शक

हे पिता ! पूरे परिवार के रक्षक
अनजानी राहों के पथ प्रदर्शक
आपकी हर वाणी अनमोल
कभी कड़े तो कभी मीठे बोल।

आपने भरा कूट कूटकर संस्कार
रहने न दिया कोई विकार
पढ़ाया अनुशासन का पाठ
बताया जीवन नहीं है कोई ठाठ।

गगन में सितारे बन चमकना सिखाया
पंखों को फैलाकर हमें उड़ना सिखाया
कर निरंतर प्रयास हो जाओगे सफल
अनुकरणीय कथ्य आपने ही बताया।

दीपक बन खुद को जलाया है आपने
रोशनी बन राह को दिखाया है आपने
बुलंदी तक पहुँचे मेहनत को ईमान बना
हर बारीक बात समझाई है आपने।



ग़ज़ल

राजेन्द्र सिन्हा
कस्बा, शंभुगंज बांका
मो. : 9122 371 334

कहने को कहीं अकाल का मंजर नहीं मिला
लेकिन वो दिल कहाँ है जो बंजर नहीं मिला

उसकी संगत न हासिल हुई तो क्या कहें
हमको हमारा साथ भी अक्सर नहीं मिला

दिन भर के इंतजार की फुर्सत न थी नसीब
हड़बड़ा के हम गये तो वह घर पर नहीं मिला

कुछ दोस्त हम से तंग हुए, कुछ से हम खफा
है यों कि हमको हम सा कलन्दर नहीं मिला

एक रोज ही में शहर का नक्शा बदल गया
कल तुम जहाँ रहते थे, वह घर नहीं मिला।







पुष्प भारती

बेलहर, बांका, बिहार
मो.-7091 760 749

सरस्वती वंदना

वीणापाणि की जय, महारानी की जय!
बोलो आदि भवानी की जय, जय, जय!

बोलो विद्यादायिनी की, जय, जय, जय!
बोलो हंसवाहिनी की, जय, जय, जय!

बोलो पद्मासना की, जय, जय, जय!
बोलो श्वेत परिधाना की जय, जय, जय!

बोलो जननी ब्रह्मनी की, जय, जय, जय!
वीणापाणि की जय! महारानी की जय!

बोलो आदि भवानी की, जय, जय , जय!

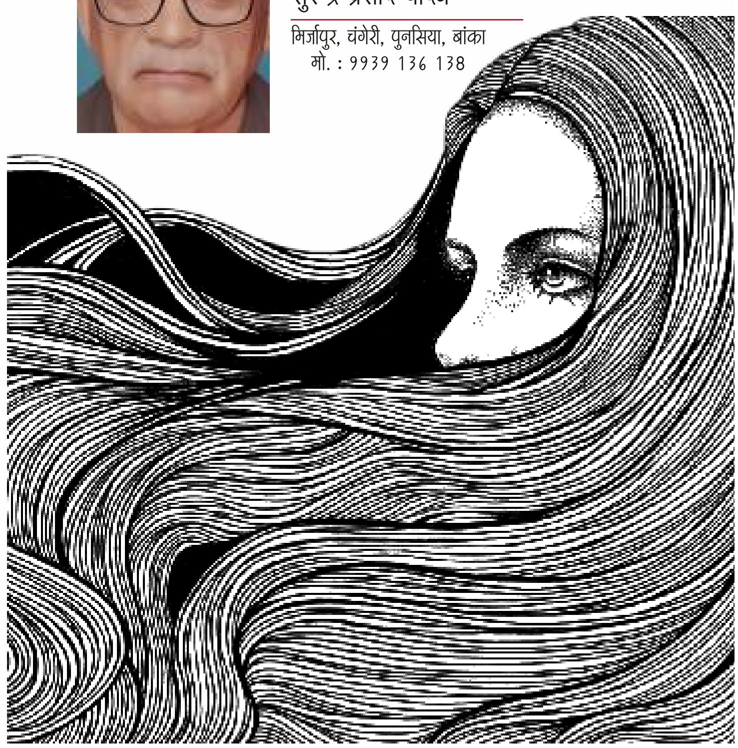
लघुकथा

हौसला



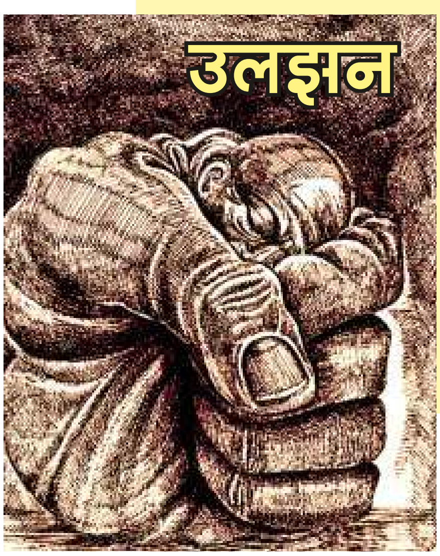
सुरेन्द्र प्रसाद यादव

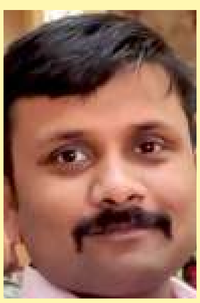
मिर्जापुर, चंगेरी, पुनसिया, बांका
मो. : 9939 136 138



अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और हौसले के बूते, परिवार का बोझ ढोने में सफल रही फूलवती की आंखों से झर- झर आंसू टपक रहे थे। उसे स्मरण हो आया था कि कैसे कभी अत्यधिक शराब पीकर, उसके पति भीषण दुर्घटना के शिकार हो, अपनी जान से हाथ धो बैठे थे। तब से दो बच्चों की जिम्मेवारी उसके ऊपर ही आन पड़ी थी। प्रतिकूल परिस्थिति में भी उसने कभी हार नहीं मानी और वह हर कठिन चुनौती को स्वीकार करती, तरह-तरह के छोटे-मोटे कार्य करती, एक दिन उत्तर-प्रदेश के परिवहन विभाग के सलेक्शन-ग्रेड में आ गयी। चयन-पत्र पढ़कर ही उसकी आँखों से आंसू टपक रहे थे...।

शायद वो आंसू पाठकों से कह रहे थे, 'काश! आज उसके पति जिन्दा होते तो वे भी अपनी पत्नी के साहस, संघर्ष व हौसले को जरुर सलाम करते।' ❁





दुर्गेश नंदन

विश्वकर्मा स्थान के सामने
पुरानी बस स्टैंड, भागलपुर रोड
बांका - 813 103
मो. : 8368 702 410

उलझनों से भी
सुलझाती हैं उलझनें
अक्सर सुलझे हुओं के सामने भी
कभी कभी आती हैं उलझनें।

आप कितने दक्ष चालक हैं
सिर्फ़ यही मायने नहीं रखता
सामने वाला कैसे चल रहा है
यह भी कोई कम महत्वपूर्ण नहीं।

कोई भी उलझन इतनी बड़ी नहीं होती
कि सामने वाले को
कायर, नपुंसक ही बना डाले
फौलादी तेवरों को
चूर चूर ही कर दे।

जरूरी है ऐसे में
शस्त्र और शास्त्र के प्रयोग की
उसमें नियम और संयम की
बुद्धि और विवेक की
मर्यादित सीमा में विचरण की।

ओ जीत!



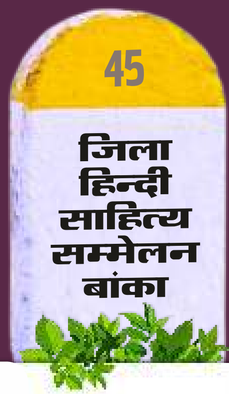
आशुतोष कुमार चौधरी

श्यामा, रजौन, बांका - 813107
मो. : 6205 543 049

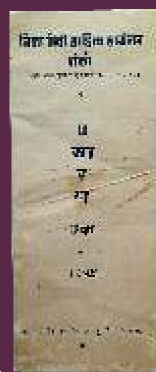
ओ जीत!
कहाँ हो छुपी?
क्या मुझसे हो नाराज
या मुझसे डरी हुई?
जब मैं सोया रहता
तू हार की हार पहना जाती
और जागते ही
मुझपर गुस्सा करती
क्या यही है मेरी नियति
या मुझसे डरकर ऐसा है करती?

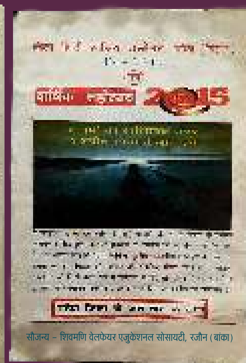
सुनो भी!
तोड़ दूंगा एक दिन
तुम्हारा यह भी भ्रम
सोचती हो जो संभव
बहुत बड़ी हो स्वयं में तुम।

जान लो! मगर
कईयों से दूर
भागकर भी तुम
अंततः
उसी की होकर रह गई हो
शायद इस हद तक ही है
ज्ञान का फलक तुम्हारा!

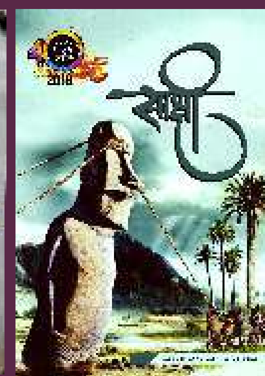


जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन बांका
की ओर से समय-समय पर
प्रसारण बुलेटिन व स्मारिका
जारी किए जाते रहे हैं
जिसमें साहित्यिक गतिविधियों का
समुचित लेखा-जोखा रहा है।
उनमें से कुछ प्रतियां यहां प्रस्तुत हैं।







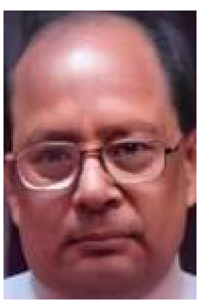


1995 | 2015 | 2022 | 2018

सफर के साथी कुछ पत्थर मील के

नज्म

न दिल से जुदा कीजिए



अरुण कुमार श्रीवास्तव
रजौन, बांका - 813 107
मो. : 9631 868 284

एक दिल है जिसे दु:खा न दीजिए
एक दिल है न दिल से जुदा कीजिए।

दिल गुनहगार फिर सजा के लिए
आज दिल को दिल से सजा दीजिए।

दिल तो अरमान है दिल तो मेहमान है
दिल तो तेरा-मेरा इक पहचान है।

दिल को रोको नहीं दिल को टोको नहीं
एक दिल है फिर दिल से लगा लीजिए।

आपका दिल दु:खा चूर मेरा हुआ
आपका दिल अब आज मेरा हुआ।

आपका दिल हमें सुर-गम दे गया
दिल दु:ख ही गया तो मना लीजिए।

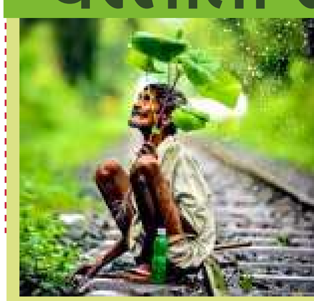
एक दिल है जिसे न दु:खा दीजिए
एक दिल है न दिल से जुदा कीजिए।

एक भयानक बरसाती रात



प्रवीण कुमार प्रणव
हस्तिनापुर, शंभुगंज, बांका
मो. : 9931 653 098

बरसात क्या होती है
उसको पता चलता है
जिसका घर चूता है
वो रात-भर जगता है।
जलावन भींग जाता है
खाना पक नहीं पाता है
बच्चा भूखा खिन्नाता है
लोरी भी सो न पाता है।
बरसात क्या होती है
उसको पता चलता है
जिसका घर चूता है
वो रातभर जगता है।
मढ़ैया पानी उपछता है
डिबि, लालटेन पझता है
बांस-बल्ली कड़कता है
आंख अन्होनी पड़कता है।
बरसात क्या होती है
उसको पता चलता है
जिसका घर चूता है
वो रात भर जगता है।



लघुकथा

शशांक

जयेश श्रीवास्तव
द्वारा : श्रीमती इला सिन्हा
बाबूटोला, बांका
मो. : 9674 019 374





उस समय हमारे पास पढ़ाई के अलावा करने को और कुछ भी नहीं था। हम दोनों पूरे दिन शांत रहते थे और हमारे बीच की शांति आरामदायक होती थी। बचपन से ही हम दोनों साथ थे और सब कुछ एक साथ ही किया। जो भी होता सबसे पहले हम एक दूसरे को ही बताते थे। मैं रोज सुबह उसकी चाय बनाते हुए गाने की आवाज से उठता था। पता नहीं वह कैसे हमेशा पहले उठ जाता था। जब लगता था कि बस, अब और नहीं पढ़ना, तब मैं उठकर हम दोनों के लिए चाय बना कर लाता था (क्योंकि दोपहर को मेरी बारी होती थी) और हम दोनों खिड़की के सामने बैठ, बारिश होते हुए देखते। परीक्षा के पहले के दिनों में हमेशा ही बारिश हो रही होती थी। ये छोटे ब्रेक्स मन को शांति देते थे। पूरे दिन हमारे मन में बस पुराने हिंदी गाने चलते रहते थे। कभी-कभी हम दोनों में से कोई एक टेबल बजाते हुए गाना शुरू कर देता।

परीक्षा के एक हफ्ते पहले किसी किताब के लिए शशांक बाहर गया और बहुत देर बाद वह जब लौटा तो एक बिल्ली के साथ, और कहा, ''अब यह भी हमारे घर का हिस्सा है।'' वह बिल्ली तो ठीक थी मगर वह नहीं। उसका छाता और वह किताबें जो वह लेने गया था वह गायब थी और भींगा हुआ शशांक थरथर कांप रहा था। सो के उठने के बाद उसने गर्व से कहा, ''मैंने उसे कुछ कुत्तों से बचाया, और भागते भागते उसका सामान पीछे रह गया।''

परीक्षा का दिन आ चुका था पर उसकी स्थिति ठीक नहीं थी। उस हाल में भी उसने परीक्षा दी। रिजल्ट के दिन मैंने बोर्ड पर अपना नाम ढूंढने से पहले उसका नाम ढूंढा, पर पास होने वालों की लिस्ट में उसका नाम नहीं था। घर पहुंच उसे यह बात बताई तो उसने कुछ नहीं कहा। मेरे पास होने की खुशी मुझे महसूस नहीं हुई। हमारा बचपन से पढ़ाई खत्म करके एक साथ कुछ बड़ा करने का सपना था। पैसे कमा कर अमीर होने का सपना। पर वह पीछे रह गया। उससे यह बात अपने माता-पिता को बताने की हिम्मत नहीं हुई।

''बस एक और साल'' - मैंने उससे कहा पर उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। अगले सुबह उसके गाने की आवाज और चाय की सुगंध दोनों ही मेरे जीवन से जा चुकी थी। ❁

हास्य दोहे



अशोक झंझटी

शंभूगंज, बांका

मो. : 9973 274 148

कलयुगी कबीर वाणी

मंत्री महलों में रहे, प्रजा करे तरुवास।
प्रजातंत्र इसको कहे, राम राज्य हो नाश।।

बेकारी और भूखमरी, छाई हो चहुँओर।
अमन चैन क्यों रहे, जब राजा हो चोर।।

जनता पानी को तरसे, मंत्री पीये जूस।
महल में दीवाली मने, छप्पर पर ना फूस।।

भगवान नेता दोनों खड़े, काको लागू पांव।
ठेका लोन परमीट जो, दे मंजूर कराय।।

फिरौती रंगदारी से, धंधा भला ना कोय।
बिन पूंजी के काम है, पल में लखपति होय।।

शिक्षक करे राजनीति, शिक्षिका करे श्रृंगार।
मूरख की लगी भीड़ है, साक्षरता का प्रचार।।

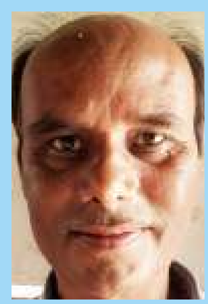
बिना टिकट यात्रा करे, सो होशियार कहाय।
टिकट वाले पकड़े गए, टी टी खूब कमाय।।

नरम भाव चलता नहीं, गरम भाव चली जाय।
ए के सैंतालीस से, सब सुलभ हो जाय।।





आ गई देवलोक की गंगा



कैलाश प्रसाद सिंह
बौंसी, बांका-813 104
मो. : 8011 073 979

आ गई देवलोक की गंगा
गौतम की तपो-भूमि पर
सिद्धार्थ के पग रज धोने
बोधिवृक्ष को अमर बनाने
जरा-मरण के बंधन मिटाने
घर-घर की प्यास बुझाने
आ गई देवलोक की गंगा...
महावीर की निर्वाण-भूमि पर
कण-कण की प्यास बुझाने
बंजर-भू को सदाबहार बनाने
पतितों को परित्राण कराने
आ गई देवलोक की गंगा...
कालिदास की मनो-भूमि पर
रामगिरि की पदो-भूमि पर
मेघों को पुनः रिझाने
अलकापुरी संवाद भेजवाने को
आ गई देवलोक की गंगा...
तपो-भूमि को हरित बनाने
पादप विहीन पर्वतों को
नव अनगंजे परिधान पहनाने
एक नया इतिहास बनाने
आ गई देवलोक की गंगा...।



उदयेश रवि

पर्वत, अरण्य और नदियों के बीच की उपत्यका है 'बांका'। आज का बांका भी बराबर खबरों की सुर्खियां बटोरता है कि बांका का वन क्षेत्र बिहार में प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। खनिजों और रत्नों के लिये मध्यकाल से यह क्षेत्र ख्यात रहा है। तीर्थ के स्तर पर भी बांका विश्व में विशिष्ट स्थान रखता है। समुद्र मंथन की कथा का केंद्र 'मंदार पर्वत' इसी बांका में है जिसकी चर्चा कालिदास और मेगास्थनीज व अन्य ग्रीक इतिहासकार करते हैं।

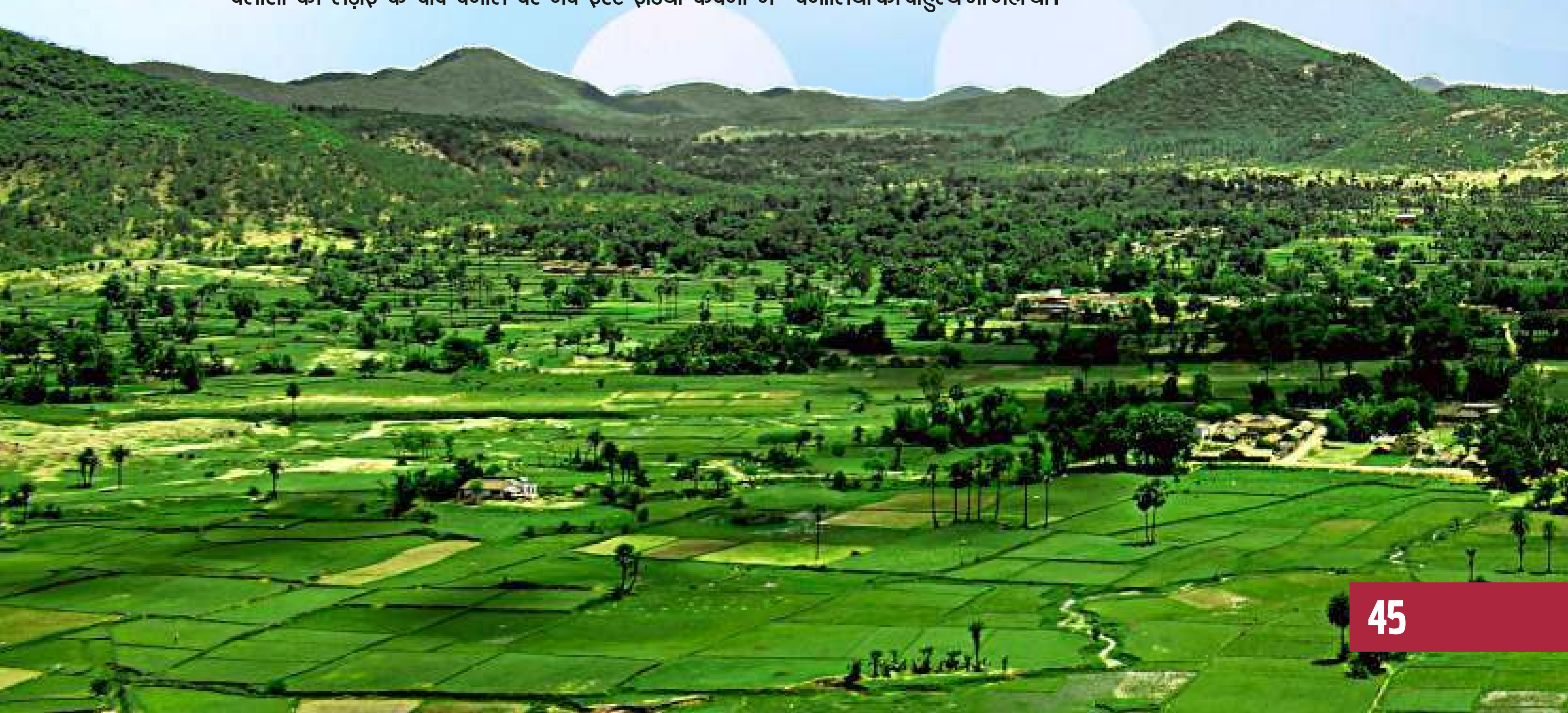
इतिहास में बांका

मंदार की यात्रा ह्वेनसांग ने भी की। साक्ष्य बताते हैं कि भगवान बुद्ध और भगवान महावीर भी इसके आसपास के क्षेत्रों में भ्रमण करने आए। 'विनयपीटक' के चाम्पेय स्कंधक में भगवान बुद्ध के जिस 'आपण' में पधारने की चर्चा है वह मंदार क्षेत्र का एक आपण यानी वाणिज्यिक नगर है। मंदार के नीचे एक विशाल वाणिज्यिक नगर था जिसे वालिशा नगर कहे जाने की परंपरा है। इस बारे में कहा गया है कि यहां '52 बाजार और 53 गलियां' थी।

आखिर, सहज ही यह प्रश्न उठता है कि 'बांका' नाम क्यों है इसका? कुछ जानकार कहते हैं कि 'बंग का' का अपभ्रंश है बांका। बंग अर्थात बंगाल। यानी बंगाल का हिस्सा।

पलासी की लड़ाई के बाद बंगाल पर जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने अधिकार किया तो इस भागलपुर वाले भाग को लोवर बंगाल का दर्जा मिला। इसी भागलपुर में बांका का यह क्षेत्र था। लेकिन बाद में राजस्व भू-स्थितियां निर्धारित की गई। सबसे पहले पूरब मे पीरपैंती तक लोवर बंगाल का क्षेत्र निर्धारित किया गया था।

सन 1768 में बंगाल और बिहार का क्षेत्र राजस्व के रूप में अलग किया गया तो नियंत्रण केंद्र मुर्शिदाबाद भले ही रखा गया लेकिन सरकारी कागजातों में लोवर बंगाल का इलाका पूरब की ओर खिसकता चला गया। पश्चिम का यह इलाका 'बिहार' था। सवाल है कि पीरपैंती से पश्चिम बंगाल का क्षेत्र था ही नहीं तो इस क्षेत्र का नाम 'बंग का' क्यों रखा गया भला! यहां तो बंगालियों का बाहुल्य भी नहीं था।







'बाँका' बिहार का एक जिला है। चारों ओर से नदी के संजाल से घिरा यह त्रिमुहान क्षेत्र है जिससे झारखंड की सीमा लगती है। कह सकते हैं कि यह वो क्षेत्र है जहां प्रवेश करने के लिए पहले आपको चरण धोने होते हैं। अब नदियों पर पुल बन गए तो चरण धोने की परंपरा समाप्त हो गई। किंतु प्राचीन भारतीय परंपरा है कि अतिथि को पांव धोने और चेहरा पखारने के लिये एक लोटा पानी सबसे पहले देते थे। भारतवर्ष की नदियां इस परिपाटी का संपोषक ही नहीं शिक्षक भी रहीं।

बांका में आप आम लोगों से पूछें कि इसका नाम 'बाँका' क्यों पड़ा? वे बताएंगे कि यहां के लोग बाँका होते थे इसलिए...। वैसे, बाँका का शाब्दिक अर्थ है- वीर, डेढ़ा, टेढ़ा, प्रियतम, प्रियदर्शी जैसे और भी। लोग कहेंगे कि यह क्षेत्र लड़ाकों का रहा है, वीरों का रहा है इसलिए 'बाँका' है। यह सच है कि क्षेत्र लड़ाकों का रहा मगर अंग्रेज इसे बाँका क्यों कहते भला? कुछ तो यह भी कहेंगे कि चांदन नदी यहां से टेढ़ी होकर गुजरती है इसलिये इसका यह नाम पड़ा किंतु यह सब अनुमानों पर ही आधारित है।

बाँका की पहली चर्चा 1810 में आए फ्रांसिस बुकनन करते हैं। उन्होंने इस बाँका क्षेत्र में 6 नवंबर 1810 को पहली बार कदम रखा था। वे पर्वतों की गोद में बसे पहरीडीह पहुंचे जहां 58 वर्षों बाद 1869 में बाबू रास बिहारी बोस पहुंचे थे। वहां आसपास से लौह अयस्क हेमेटाइट लाकर लोहा पृथक्करण के बाद उससे औजार बनाने का काम होता था। यह काम कोल जाति के लोग करते थे।

इससे पहले इस क्षेत्र का सर्वे करने जेम्स रेनेल ईस्ट इंडिया कंपनी के मुख्यालय फोर्ट विलियम के गवर्नर हेनरी वेंसिटार्ट के 6 मई 1764 का पत्र लेकर आए थे। उनके साथ एक सहायक सर्वेयर, 3 अन्य सहायक यूरोपियन, 11 लश्कर, 11 मोटिया, 11 सिपाही व एक दुभाषिया था। इस दल में कुल 39 सदस्य थे।

रेनेल ने इस इलाके के सभी सड़क, नदी-नालों, टीलों, मंदिरों का अवलोकन किया। इस बात पर भी गौर किया कि लोगों का रहन-सहन क्या है? रेनेल नीत टीम को तब बाँका जैसी कोई खास जगह नहीं मिली। इसलिये उन्होंने इस स्थान की चर्चा नहीं की। हां, इसके समीप एक ग्राम जरूर था जिसे 'बोगरिया' कहा जाता था। यह बाँका से एक किलोमीटर दक्षिण में बड़ा ग्राम था। इससे यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता कि बाँका तब था या नहीं। रेनेल ने अपने सर्वे में, नक्शे में इसकी चर्चा नहीं की।

'बाँका' नाम भगवान कृष्णा का भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए। उन्हें ब्रज में बाँके बिहारी कहते हैं तो नदिया (पश्चिम बंगाल) में 'बाँका' ही पुकारा जाता है। अब भी नित्यानंद महाप्रभु (निताय) के एकचक्र ग्राम में कृष्ण का प्रसिद्ध मंदिर है। इनके विग्रह को 'बाँका' ही कहते हैं। वैसे, बहुत जगह माधव को 'बाँका' कहने का प्रचलन है।

चैतन्य देव नदिया ग्राम से मंदार होते हुए गया तीर्थ इसी मार्ग से गए। गीताप्रेस और गौड़ीय संप्रदाय द्वारा प्रकाशित 'चैतन्य चरितावली' इस यात्रा को अति-संक्षेप में बताता है। उनके साथ चल रहे संगियों ने अपनी डायरी में लिखा है कि बाँका (कृष्ण) के जिस विग्रह को वे साथ लेकर चल रहे थे उसे मंदार से आगे बढ़ने पर नदी पार के एक राजा के अनुरोध पर अपनी निशानी के तौर पर छोड़ गए। भौगोलिक साक्ष्य यह संकेत देते हैं कि वह जगह आज का ककवारा ग्राम है।

सन 1866 में ककवारा के पहाड़ के समीप कुछ लोगों द्वारा कृषि कार्य के दौरान कांस्य की एक प्रतिमा मिली थी। इस पर एक पुरालेख है। इस लेख को 1871 में जेम्स बर्गीज़ ने पढ़ा। इससे पता चलता है कि यहां एक विशिष्ट नगर था। इस नगर के राजा का नाम 'गोविंद पा' था। यह मूर्ति उनके राज्यारोहण के 23वें वर्ष में प्रतिष्ठित की गई थी।

सन 1507 में चैतन्य महाप्रभु की टोली इस होकर गई थी। यहां के राजा ने उक्त विग्रह को ग्रहण किया था। इस घटना के बाद यहां चैतन्य महाप्रभु के हरे कृष्ण भावनामृत का प्रसार हुआ। यह कथा आज भी चर्चित है कि मंदार पर्वत से वे जमदाहा, ककवारा, तारापुर होते हुए गंगा के किनारे-किनारे पुनपुन पहुंचे और फिर वहां से गया तीर्थ। यह लंबा रास्ता संभवतः सघन वन क्षेत्र में पलनेवाले हिंस्र पशुओं से बचाव के कारण उनके दल ने चुना होगा।

जहांगीर काल की एक पुस्तक 'तुजुक-ए-जहांगीरी' का विवरण इस ग्राम का नाम 'चक्रवर' बताता है जो खड़गपुर राज के अधीन था। चक्रवर का अर्थ ही होता है - चक्र धारण करनेवाले पुरुष। चक्र किस देवता का आयुध है इसे सभी जानते हैं। आशय यह कि यहां भी कृष्ण ही हैं। ये ही स्पष्टतः 'बाँका' हैं।





‘बाँका’ यानी कृष्ण के जिस विग्रह को वे साथ लेकर चल रहे थे उसे मंदार से आगे बढ़ने पर नदी पार के राजा के अनुरोध पर अपनी निशानी के तौर पर छोड़ गए।

इतिहासकार केपी जायसवाल मानते हैं कि बोगरिया ग्राम 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में बसा। यहां कुछ लोग भागलपुर के चंपानगर से आए जिन्हें डुमरॉंवा/डुमरामा के जमींदारों ने बसने नहीं दिया था। ये बोगली (भैरवा तालाब) के किनारे बसे लोग थे। इन्हें ‘बोगलिया’ कहा जाता था। इनके बसावट की जगह को पहले बोगलिया कहा जाता था। बाद में अपभ्रंश रूप में यह ‘बोगरिया’ हो गया।



इतिहासकार केपी जायसवाल मानते हैं कि बोगरिया ग्राम 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में बसा। यहां कुछ लोग भागलपुर के चंपानगर से आए जिन्हें डुमरॉंव के जमींदारों ने बसने नहीं दिया था।

ये बोगली (भैरवा तालाब) के किनारे बसे लोग थे। इन्हें बोगलिया कहा जाता था। इनके बसावट की जगह को पहले बोगलिया कहा जाता था। बाद में अपभ्रंश रूप में यह ‘बोगरिया’ हो गया। अब इसे एक मानक नामकरण विजयनगर दे दिया गया है।

बोगलिया से इस संपूर्ण इलाके में केदारवंशी फैले। आज के बाँका जिले में जहां भी कादर जाति के लोग मिलते हैं वे पूर्णिया से बोगलीपुर यानी भागलपुर; फिर बाँका में आए। इस जाति के लोग मिट्टी काटने में प्रवीण थे। इन्हें भागलपुर के भैरवा तलाब उपाख्य बोगली यानी बड़े तालाब के आसपास मिट्टी काटने के उद्देश्य से ही लाया गया था। उस समय यह समस्या थी कि आक्रमणकारी उस गांव को सर्वाधिक क्षति पहुंचाते थे जो सघन होता था। अतः छोटे-छोटे जमींदार अपने कुनबे में बाहरी अनजान लोगों को कम ही बसाते थे।

चैतन्य महाप्रभु के आगमन के बाद चक्रवरा अपने समय में ‘बाँका मंदिर’ से ख्यात हो गया था। वह समय साहित्य और इतिहास में वैष्णव काल कहा जाता है। नाम संकीर्तन की परंपरा चैतन्य के प्रताप से इस क्षेत्र में भी विस्तृत हो गई थी। यह क्षेत्र पूर्व से मधुसूदन के प्रभाव में था जिसे चैतन्य महाप्रभु और वल्लभाचार्य ने आकर अधिक प्रभाव भर दिया। उसी बाँका मंदिर की प्रसिद्धि के कारण इस जगह का नाम ‘बाँका’ पड़ा।

चक्रवर का अपभ्रंश चक्रवरा ग्राम अब ककवारा नाम से जाना जाता है। यह अंग्रेजी लेखन का प्रभाव है। अंग्रेज इंग्लिश में सी अल्फाबेट का प्रयोग कर संस्कृत के शब्द ‘चक्र’ को ‘कक्र’ लिखते थे। ककवारा के तोमर टोला में बांका का यह इतिहास प्रसिद्ध मंदिर था जो अब ज़मीन में 15 फीट से अधिक धंस चुका है। इसका प्राचीन विग्रह ज़मीन से लगभग 20 फीट नीचे चला गया है। यह आंशिक रूप से नज़र आता है। जब इस मंदिर का अस्तित्व था तब 1897 में यहां स्थानीय जमींदार द्वारा एक कुआं का निर्माण कराया गया।

सन 1913 में बाँका ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति तब अर्जित की जब यहां समुद्रगुप्त काल के दो सिक्के निकले थे। इनमें से एक स्वर्ण का सिक्का था और दूसरा चांदी का। तब यह बात चल निकली कि आखिर समुद्रगुप्त से बाँका का क्या संबंध है? जबकि उस काल की बहुत मूर्तियां यहां आसपास शिल्पित हैं।

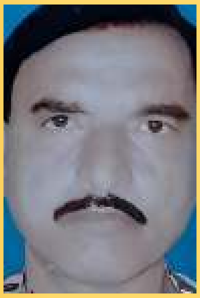
एक इतिहासकार ने कहा है कि यहां का कोई व्यक्ति गुप्तों की सेना में रहा होगा। यह मुद्रा उसी की हो सकती है। किंतु सेना में होने के अलावा इसकी भी प्रबल संभावना है कि इस क्षेत्र में गुप्तकाल में शिल्पकार नियुक्त थे जिन्होंने जह्नुगिरि (सुल्तानगंज), खड़गपुर की पहाडियों, मंदार, बटेश्वरनाथ के शैल खंडों पर शिल्प उत्कीर्ण किये। उन्हें पारितोषिक या मजदूरी में यह प्राप्त हुआ हो। इसकी प्रबल दावेदारी इसलिये है कि खड़गपुर के समीप संग्रामपुर के आसपास की पहाडियों में गुप्तकाल के शिल्प मिलते हैं। अनुमान है कि वहां शिल्प कर्म के उपरांत वे बांका के रास्ते चांदन नदी होते हुए मंदार आये हों और रास्ते में ये मुद्राएं नदी में गिर गई हो।

‘भागलपुर दर्पण’ में झारखंडी झा लिखते हैं कि सन 1863 में बांका को सबडिविजन बनाया गया। किंतु तत्कालीन सरकारी अभिलेखों से यह जानकारी मिलती है कि सन 1869 में बाँका सबडिवीजन बना। उससे पहले बौंसी सबडिवीजन था। बौंसी में गोड्डा और हंसडीहा से आगे के क्षेत्र थे। बाँका के पहले एसडीओ बाबू रासबिहारी बोस थे। इनका क्षेत्रीय ऐतिहासिक भ्रमण और लेखन आज भी आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

बोस बाबू के काल 1870 में बाँका में 7 कैदियों को रखने के लिए पहली बार जेल बनाया गया था। तब एक प्राथमिक इंग्लिश स्कूल बोगरिया में हुआ करता था। इसे किसी कायस्थ ने अपने निजी फंड से स्थापित किया था। सन 1899 में रानी महकम कुमारी ने यहां एक इंग्लिश हाईस्कूल बनवाया। आज यह रानी महकम कुमारी इंटरस्तरीय विद्यालय (आर.एम.के.) है। सन 1959 में पंडित बेनी शंकर शर्मा (1967 में सांसद) ने पीबीएस कॉलेज की स्थापना की। इनके पिता पंडित बालीराम शर्मा कलकत्ता हाईकोर्ट में आयकर के नामचीन अधिवक्ता थे।

अब 21 फरवरी 1991 से बाँका एक जिला है। हां, वो ‘बोगरिया’ अब इस शहर का एक भाग है। ❃

ग़ज़ल



प्रकाश सेन प्रीतम

बरौनी, रजौन, बांका-813107

मो. : 8603 051 442

यूँ तो हमारा ठिकाना वही है
मगर ठिकाने का ठिकाना नहीं है

हकीकत बताऊँ तो किनको सुनाऊँ
बताने का अब जमाना नहीं है

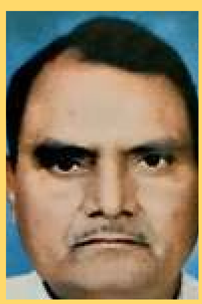
हमें तो डर है अपनों के लहू से
छूटे हैं रिस्ते जुड़ाना नहीं है

अपना बताके लूटा है जिसने भी
जानता हूँ मगर बताना नहीं है

जिनको भी समझा था दुश्मने-जानी
उन जैसा अपना याराना नहीं है

यहाँ अच्छे और बुरे 'प्रीतम' हैं कितने
कभी दिल बुरों से लगाना नहीं है।

कब होगा



रामजी चन्द्र

संयोजक : साहित्य परिषद् खेसर, बांका

मो. : 9572 173 498

देना ही है सम्मान जब महिलाओं को
फिर करते ही क्यों उसका अपमान?
सवाल तो यही है
हिंसा, आगजनी की क्यों होती वो शिकार?
अपहरण व बलात्कार घटित
जघन्य अपराध में मर्मान्तक पीड़ा लिए
क्यों हो जाती वो बेपर्द?
...और भी कई-कई हैं सवाल
उसके इर्दगिर्द हवा में तैरते!
मसलन भ्रूण-हत्या, दहेज,
बेमेल-विवाह वगैरह का
अनुत्तरित प्रश्न?
आखिर दोषी है कौन?
जन या तंत्र?
पीछे इसके किसका षड़यंत्र?
कहीं भाषणों, जुलूसों
और अखबार के पन्नों में
दीखता नहीं समाधान!
हे इन्सान! कब होगा?
नारी का कल्याण?





देखा है तुम्हें



संजय घोष 'मासूम'

बाबू टोला, बांका, बिहार - 813102

मो. : 9953 818 868

तुम्हें देखकर ऐसा लगा
कि पहले भी
कई बार देखा है तुम्हें!
सबसे पहले सिनेमा हॉल की
अगली सीट पर बैठे हुए
फिर बाहर निकलते हुए
और सिर्फ एक बार
पलकों को झपकाते हुए
देखा है तुम्हें...

उसके कुछ दिन बाद मैंने तुम्हें
रेस्तरां के टेबल पर
चाय की चुस्कियाँ लेते
अपनी कुछ सहेलियों के साथ देखा
'मुझे भ्रम हुआ था उस दिन
कि तुम पहले की अपेक्षा
दुबली और सुंदर हो गई हो...'

पुनः मैंने देखा तुम्हें
गलियों में मुड़ते और मुस्कराते

हाथों का हल्का इशारा करते तुम्हें
तुम्हारी गलियों में मुड़ते हुए देखना
पुनः चाहता हूँ तुम्हें
सिनेमा हॉल की अगली सीट पर बैठे हुए
रेस्तरां की टेबल पर चाय की चुस्कियाँ लेते
सहेलियों के साथ
व तुम्हारे ही गलियों में तुम्हें मुड़ते हुए...!

लघुकथा



डॉ. पुष्प कुमार राय
खेसर, बांका
मो. : 6206 053 528

कटु अनुभव

"मां जी, आप आ गईं। कैसा रहा कार्यक्रम? आपको तो बहुत मन लग रहा होगा क्योंकि वहां तो आप की तरह ही पुरस्कार पाने वाले सभी सीनियर सिटीजन होंगे। काश, मैं भी आपके साथ जाती। कितना अच्छा लग रहा होगा जब डीएम साहिबा आपको स्टेज पर सभी के सामने सम्मानित कर रही होंगी। कहां है आपका गिफ्ट, मां जी?" सुमित्रा की बहू बोली।

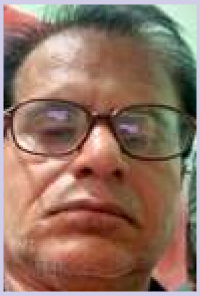
"हां, कार्यक्रम तो मिला जुलाकर ठीक ही था। मुझे तो ऐसा ही लगा। पता नहीं अन्य लोगों को कैसा लगा। लेकिन बहुत भीड़ थी। मेरे ख्याल से तुझे इसके लिए पछताना नहीं चाहिए। हो सकता है यदि तुम जाती तो तुझे कहीं और पछतावा होती।" सुमित्रा बोली।

"अच्छा छोड़िए इन सब बातों को। इस तरह के कार्यक्रम में कुछ न कुछ खामियां रह ही जाती हैं। आपको जो भी मिला उसे बताईए न मां जी।" बहू बोली।

"मुझे कटु अनुभव मिला।" सुमित्रा बोली।

"मतलब?" बहू बोली।

"मतलब यही कि मुझे बुलाया तो गया लेकिन वहां आज से तीन साल बाद रिटायर करने वाली शिक्षिका को सीनियर सिटीजन के तौर पर सम्मानित किया गया।" सुमित्रा बोली। ❁



नन्दलाल सारस्वत
नवटोलिया, रजौन, बांका - 813107
मो. : 9430 456 541

बांकेश कर्ण

छल से यश क्या रहे टिकाऊ? वह वर्षा का पानी-फोका,
जन्म लिया और फूटा तक्षण, छल तो गर्म हवा का झोंका।

परहित को ही जीते-मरते, परहित का ही जिसका जीवन,
वही धरा का देव कहाता, जीवन उसका पावन-पावन!

गढ़ता है इतिहास नया वह, फिर भविष्य को राह दिखाता,
उससे ही सम्मानित जग है, कल्प उसी का यश है गाता!

जो सिंहासन पर मरता है, वह राज खातिर छल करता है,
एक बार मरने के बदले, वह सौ- सौ बार मर जाता है!

जिसके लिए सिंहासन सब कुछ, भरी नींद में स्वप्न उसी का,
पुण्य-कर्म को पाप समझता, पाप-कर्म का लेकर टीका!

कर्ण कभी भी नहीं मरेगा, काल-भाल पर चढ़ा हुआ यह,
यह तो कल्पों तक जीएगा, नियति-भाग्य से बढ़ा हुआ यह।

इसके यश से यशपति होगा, स्वर्गलोक, पाताल, धरा यह,
आज भले विपरीत काल हो, कल होगा अनुकूल भरा यह!

धन्य अंग है अंगराज का, खुला नीड़ ज्यों गरुड़-बाज का,
सृष्टि-धर्म का रक्षक प्रहरी, धन्य धाम यह बांकेश खास का।

आक्रोश का स्वर

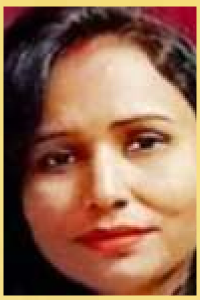
छुपाता रहा हूं मैं
अपनी मैली-फटी चादर तले
लहू-लुहान वेदना को
फड़फड़ाता रहा हूं मैं
बहेलियों के बीच
शोषण के जाल में
हताश निराश पंछी की तरह
तुम्हारे घमंड ने, जब भी चाहा
मदमत्त क्रूर दानवी पैरों को
रख दिया मेरी छाती पर
उफ तक न किया मैंने
इस अराजकतापूर्ण अत्याचार में
मेरी निर्धनता को
अपने धनकुबेर होने के अहं में
रौंदते आए हो तुम
लेकिन अब...
अन्तर्वेदना की जिजीविषा ने
आर्थिक विषमता की जमीनी सच्चाई ने
अंदर उमड़ती-घुमड़ती मर्मांतक पीड़ा को
कर दिया है आक्रोशित
अब देना चाहता हूं मैं
पूरी शक्ति से हाथ उठाकर
दुर्जनों के इस दुर्भि-संधि काल में
अपने आक्रोश को स्वर।





राजीव नयन तिवारी
कुड़रो, बौंसी, बांका
मो. : 6200 889 279





डॉ. संगीता

डेफोडिल्स पब्लिक स्कूल,
साहेबगंज, बेलहर, बांका
मो. : 9931 154 956

खुद को देखो

धर्म, मजहब के नाम!
क्यों करते हो मानवता को शर्मसार?
आबरू बेटी की लुटती है जब
कहाँ पौरूष तुम्हारा करता हुंकार ?

अत्याचारी, अनाचारी, भ्रष्टाचारी जब
समाज व राष्ट्र को करते हैं विद्रूप!
तब डगमगाता तेरा देवत्व है
फिर कहाँ बन पाता तू वीर-सपूत?

क्यों खून तब पानी बन जाता?
जब दहेज-लिप्सा में जलती बेटियाँ! असुरक्षा
के जाल फंसकर !
तड़पती, घुटती, बिफरती हैं बेटियाँ!

बहाकर लहू कब किसे जन्नत मिला?
हिंसा की जगह प्यार पसार कर तो देखो!
कभी कर्म की हथेली सूरज उगाकर
कि औरों पे खुद को लुटाकर तो देखो!



कैलाश ठाकुर

धोरैया, बांका - 813 ११4
मो. : 9931 777 744

बरगद का पेड़

बरगद का वह पेड़
निर्भीक सीना ताने खड़ा
पातालगामी जड़ें
स्तम्भकार तना
अनायास चूस रहा भू-रस

शाखें व्योमगामी
छत्रधारी
नीचे निरीह दूब
गिन रही आखिरी साँसें
नित रौंदा जाता
कठोर कदमों के नीचे
अस्तित्व उनका

बेशरम बरगद फैला रहा
अपनी सन्तति
अपरिमेय
तराशने होंगे
इनकी आक्टोपसी शाखें
खोदना होगा मूल
तभी जीवंत हो सकेगी दूब
और मुस्कुराएगी धरती।



बासुकी प्रसाद भगत

खेसर, फुल्लीडूमर बांका
मो. : 9771 145 055

बारिश

बारिश जब तुम आती हो
मन को खूब लुभाती हो,
हरियाली का घूंघट ओढ़े
धरती को खूब सजाती हो।
बारिश जब तुम आती हो...
सूखे, बंजर पर दया दिखाती
कण-कण शीतल कर जाती,
अमृत पान कराकर सब को
मखमली घास उगा जाती हो।
बारिश जब तुम आती हो...
बारिश जग के प्राण हो तुम
जीव-जगत के त्राण हो तुम,
उजड़ी बगिया को संवार कर
ऊपर अम्बर छुप जाती हो।
बारिश जब तुम आती हो...
प्यासे-नद का प्यास बुझाती
ताल-तलैया सब भर जाती,
मेढ़क के टर्र-टर्र गायन से
ऋतु- वर्षा ले आ जाती हो।
बारिश जब तुम आती हो...







डॉ. रश्मि कुमारी
डेन्टल क्लिनिक
कचहरी रोड़ बांका, बिहार
मो. 7781 896 716

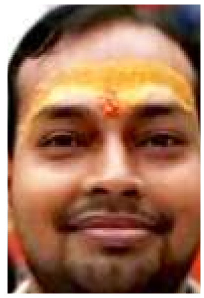
रेत–महल

तपती रेत पर
दहकते बालू-कण
मगर हो जाता ठण्डा भी
बदलते मौसम के साथ

पड़ परिस्थिति के थपेड़े
बहाता बालू है गर्म आंसू
मगर मौसम के संभलते ही
चमका लेता वह निज का
कण-कण

आश्रय वह आधार
देता सुकून भरा भौतिसुख
महल-अट्टालिकाओं की
बन के नींव व दीवार।

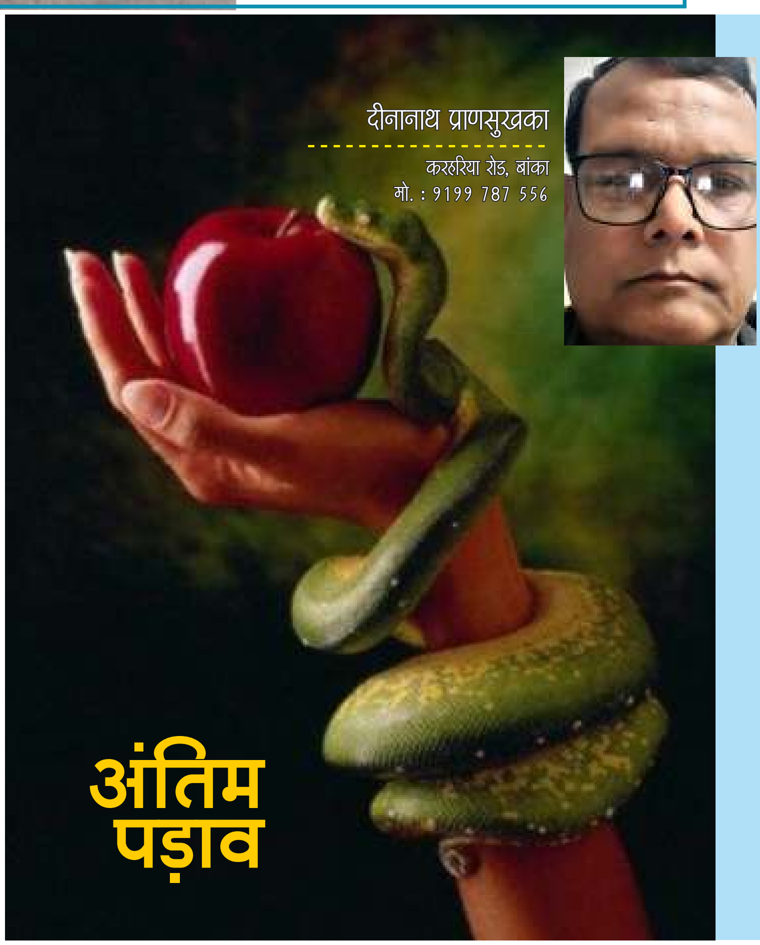




भोला सिंह 'पुष्कर'
बाबूटोला, बांका
मो. : 9546 456 324

प्रेरणा

चिंता नहीं चिंतन हो
विचारों पर मंथन हो।
थकावट हो कार्यपद्धति से
'लक्ष्य' नाम संकीर्तन हो।।
नयनों में हो एक सपना
लगे जो सिर्फ अपना।
केवल प्रयोजन से रहे सरोकार
मन से हटे भ्रांति का विचार।।
हर पल सुनाई दे अंदर की आवाज
जो बताए सफलता का राज।
अपने कर्तव्यों से क्या होना लाचार
प्रगति पथ के तुम खुद आधार।।
श्रम, समय-सदुपयोग,
आत्म-विश्वास
होती है बहुमूल्य पूंजी।
जीवन के सफल होने की
यही है एकमात्र कुंजी।।
मत हार मुसाफिर
राह में चट्टान देखकर।
अड़चनों को भूलकर
देखें नहीं पीछे मुड़कर।।



दीनानाथ प्राणसुखका
करहरिया रोड, बांका
मो. : 9199 787 556

अंतिम पड़ाव

उन बूढ़ी आंखों को आज भी उसका इंतजार रहता है
वो बहुत दूर चला गया जो उसके तसव्वुर में रहता है,

दरकती रिश्तों की दीवारों में दब न जाए वो सोच रूआंसा हो रहा है
अब जिंदगानी के ये दिन कटेंगे कैसे सोच घबरा रहा है,

ताउम्र कश्मकश वो जिसके लिए करता रहा है
वक्त कैसा आया है कि वो उसको किनारा कर रहा है,

आज तक वो जिस पर अपनी दौलत लुटाता रहा है
वृद्धाश्रम में छोड़ उसको बेगैरत वो जा रहा है,

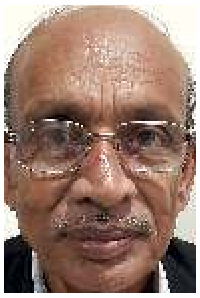
डगमगाते डगों से उससे मिलने वो नित जाता रहा है
जीता है कि मरता है वो, मिजाजपुर्सी को न कोई आ रहा है

ऐ बेवफा हयात! हाथ छुड़ा के तूने बेसहारा कर दिया है
शुक्र है उस अजल का जिसने पनाह अपने दामन में दिया है,

ये आखिरी मंजिल है, सफर का अंतिम पड़ाव है
लिबास छोड़ दिए हैं सारे कफन ही अंतिम हिजाब है,

जलकर अब वो महज राख का किस्सा बना है
हवा के झोंकों से बिखर कर वो खाक का हिस्सा बना है।

लघुकथा



लक्ष्मण मंडल

जमुआ, बांका
मो. : 9661 519 072



लॉक डाउन

“मां मुझे भूख लगी है, कुछ खाने को दो न।”

“क्या करूं बेटा? पापा रिक्शा जोतकर बाहर से अभी तक नहीं आए हैं। आ जायेंगे तो तुम्हारे लिए पावरोटी, बिस्कुट, चाकलेट आदि लाएंगे।” मां ने रूखा-सूखा सा जवाब दिया मून्नू को।

तभी अचानक मून्नू चहक उठा, “वो देखो मां, पापा बाजार से आ गए।” कहकर मून्नू दौड़कर पापा के पास चला गया और पापा के हाथ का झोला झपट कर ले लिया और बोला, “पापा, झोला तो बिल्कुल खाली है। कुछ नहीं लाए?”

पापा उदास होकर बोले, “क्या करता, बाजार में एकदम सन्नाटा, बंदी...! पता नहीं यह पापी कोरोना कहां से आ गया है। इसी कारण से लॉकडाउन लगा है। लोग जेल की तरह घर पर बंद हैं। क्या करूं बेटा एक भी सवारी नहीं मिलती। इसलिए खाली घर लौट आया। अतः तुम्हारे लिए और घर का राशन तक न ला पाया।

पापा का जवाब सुनकर मून्नू का मुंह लटक गया। बाल सुलभ को दिल में गहरी चोट लगी। फिर भी, कुछ आशा लेकर पापा से बोला, “ठीक है। आज नहीं तो कल...। पापा आपको भूख लग गई होगी। चलिए, मम्मी चूल्हे में कुछ पका रही है, शायद।”

दोनों मिलकर चूल्हे के नजदीक गए। यह देखकर मम्मी का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। क्योंकि हांडी में सिर्फ गर्म पानी खौल रहा था। ❈

गजल

काश

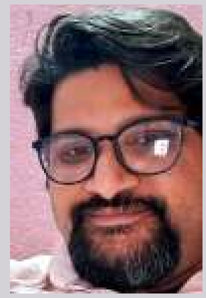


अली इमाम

अलीगंज, बांका
मो. : 8877 429 321

काश दिल होता जो पत्थर सा बेअसर मेरा
मेरी मेरी हस्सास तबीयत है दर्दे सर मेरा।
हूं मैं किताब वह जिसमें खुशी का हर्फ नहीं
भरा है गम से हरेक वर्क हर सतर मेरा।
तलाश मंजिले हयात में थक हार गया
दर्द की धूप में बे-साया है सफर मेरा।
जब मुहाफिज ही है कातिल तो कहां कैसे चलूं
रास्ता हर जगह हर सू है पुर खतर मेरा।
बदगुमानी के सबब टूट गया दिल मेरा
हुश्न है तेरा उधर इश्क है इधर मेरा।
बहरे गम में मेरे अब कोई कंकरी मत फेंक
सह सकेगा न ये जख्म अब जिगर मेरा।
अश्क पीता हूं सदा खाके गम जमाने का
रंग लाएगा कभी आंख का गुहर मेरा।
गम की तारीक घटा छाई तो लोहे दिल पर
है स्याही यही लिखने का मालोज़र मेरा।
किसको हमदर्द कहें कि हमनवा समझें
वही रहजन हुआ जो भी बना रहबर मेरा।





अमित कुमार रॉय

आसमानी चक, रजौन, बांका - 813 107
मो. : 7294 183 643

विश्वास



पथ पर चलो विश्वास कर
पग-पग चलो आभास कर
आने वाला है दिन नया
कुछ आज अलग आगाज कर।

कल जो हुआ वो गुजर गया
गुजरे कल का परिताप कर
बस यही दुआ है मेरी की
तू आज अलग कुछ खास कर।

गर हो अविश्वास मन में कोई
तो उसपर तू संघात कर
पथ जो चुना है तुमने
तू चल उसपर विश्वास कर॥

ESTD. : 2009 CBSE APPROVED

SHIV-SUBHADRA PUBLIC SCHOOL

KIDZENIA PLAY SCHOOL
ESTD. : 2021

MODERN AAWASEEY VIDYALAY
ESTD. : 1981



PROMISING FUTURES

Speciality of The School

- अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम से शिक्षण
- सह-शिक्षा (को-एजुकेशन)
- समृद्ध एवं सुसज्जित प्रयोगशाला
- शैक्षणिक परिभ्रमण की व्यवस्था
- दक्ष एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन व मेधा शिक्षा
- स्मार्ट क्लासेज़ (कंप्यूटर सहित)
- कमज़ोर छात्र-छात्राओं के लिए अतिरिक्त व्यवस्था
- आर.टी.आई नियमानुसार ई.डब्लू.एस./एस.सी./एस.टी. हेतु निःशुल्क शिक्षा

डॉ.रामसेवक सिंह
निदेशक
Mobile : 9939 308 301





अमरलता सिन्हा
उप-निदेशक
Mobile : 9934 037 654



रजौन, बांका, बिहार
☎ 9709 896 733, 9852 610 300



पवन बांके बिहारी

गिरिधरा, शंभूगंज, बांका
मो. : 8250 847 660

गुल्लर मेरा प्यार

दिन के हो
बनफूल भले तुम
शाम ढले कचनार
देख आंख से,
नाक सिकुड़ता।
सटे देह तो,
देह मुकुड़ता।
सूर्य ढले
लगती पद्मावत
गुल्लर मेरा प्यार।

देह बास है,
गंध मछारन।
चाल ढाल,
तलहट मंदारन।
मुंह अंधेरे
तुम रातरानी हो
पोर-पोर श्रृंगार।

पानीदार मुख,
रंग है फीका।
कर्ण-सुता,
ढंग सलीका।
सांझ ढले
गायब फगुनियां
उठी हवेली से चीत्कार





मयंक दत्त

बाबूटोला, बांका
मो. : 7700 879 596

राही चल

राही चल... राही चल... राही चल...
आज है चलना, अभी है चलना, न होने दे कल
राही चल... राही चल... राही चल...।

हमें है अपनी मंजिल पाना
न राहें हैं, न ठिकाना
फिर भी है क्या घबराना
चलना है बस चलते जाना
कर्म किए जा, चाहत न रख, कब मिलेगा फल
राही चल... राही चल... राही चल...।

सच्चाई पर चलना चाहें
कांटों भरी मिली है राहें
उस पथ पर हम फूल उगाएं
वसुंधरा की धूल लगाएं
कसम खाएं हम मातृभूमि की, न करना मोहे छल
राही चल... राही चल... राही चल...।



डॉ. मिसम रिजवी

गरीबपुर, लौगांय, बांका
मो. : 9199 210 556

कबीरा सबकी मांगे खैर

रूह परेशां कल्ब है गमगीं
आंख में आंसू इसके
सहमा सहमा आज का इंसा
सर से ता-बा-पैर
कबीरा सबकी मांगे खैर...

पन्ना पन्ना खून से लथपथ
वरक वरक आंसू से तर
पत्थर का तन देखा हमने
छील के सरता पैर
कबीरा सबकी मांगे खैर...

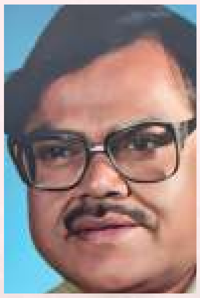
मानव मानव एक जात है
ईश्वर सब का एक
कैद नहीं भगवान मौका में
काबा हो कि दैर
कबीरा सबकी मांगे खैर...

सांझ भई यह पंखेर
जाए अपने ठिकाने पर
एक ही पेड़ पे मसकन सबका
न झगड़ा न बैर
कबीरा सबकी मांगे खैर...

भारत वर्ष की इस नगरी में
मिसम का पैगाम
प्रेम की दौलत सब को बांटो
क्या अपना क्या गैर
कबीरा सबकी मांगे खैर।

गीत

यही समय है



डॉ. अमरेन्द्र

रूपसा, रजौन, बांका - 813 107
लाल खां दरगाह लेन
सराय, भागलपुर - 812 002
मो. : 9939 451 323

आओ मिल कर सुर को साधें, सात सुरों का देश
सघन शोर के सर पर गूंजे जीवन का संगीत
इस कोलाहल से तो अब है काल तलक भयभीत
दिशा-दिशा के खुले हुए हैं काले कुंतल केश।

आओ मिल कर सुर को साधें, सात सुरों का देश
नाच उठे पतझड़ बसंत-सा, खिले शिशिर के फूल
ग्रीष्म लगे सावन की डोली चंदन-चंदन धूल
सिहरे ठूंठ कि पंचम सुर का ऐसा हो उन्मेष।

आओ मिल कर सुर को साधें, सात सुरों का देश
नदिया नाचे, जंगल नाचे, नाचे पर्वत-पर्वत
गांव-शहर के दिवस रात हो धूप-दीप, जल-अक्षत
फूलों की आंख में आंसू दिखे कहीं न लेश।

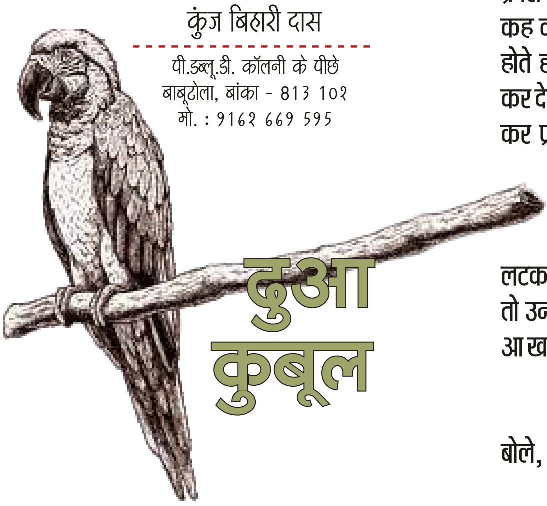
पूजा पर पढ़ता है मारण प्रेत पुरोहित-भेष
आओ मिल कर सुर को साधें, सात सुरों का देश।

लघुकथा



कुंज बिहारी दास

पी.डब्ल्यू.डी. कॉलनी के पीछे
बाबूटोला, बांका - 813 102
मो. : 9162 669 595



दुआ कुबूल

उस समय मेरे ऊपर तोता पालने का भूत सवार था। सो भागलपुर से एक जोड़ा तोता खरीद लाया। उन्हें रखने के लिये बड़ा-सा पिंजड़ा विशेष रूप से बनवाया, जिसमें इफरात जगह हो। तोते आराम से रहने लगे। माताजी सुबह सबेरे एक तोते को जब सीताराम, सीताराम पढ़ाती तो दूसरा तोता देखता रहता और जब दूसरे तोते को मैं कुरान की आयतें सुनाता तो पहला तोता मूकदर्शक बना रहता। नतीजा यह हुआ कि किसी भी व्यक्ति के प्रवेश करते ही पहला तोता 'सीताराम' 'सीताराम' कह कर उसका अभिवादन करता और उसके चुप होते ही दूसरा तोता कुरान की आयतें पढ़ना शुरू कर देता। आगंतुकगण तोतों की धार्मिक प्रवृत्ति देख कर प्रभावित हुए बिना न रहते। एक दिन हमारे पड़ोस में रहने वाले किसन लाल जी हमारे घर पधारे। वे उदास थे। हमारे दोनों तोतों ने उनका अभिवादन किया। पर वे मुंह लटकाये बैठे रहे। मैंने उनकी उदासी का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरे समक्ष एक बड़ी समस्या आ खड़ी हुई है; इसलिए आपके पास आया हूं।

''बताइये तो सही।''

किसन लाल जी गला साफ करते हुए बोले, ''मुझे सपरिवार पांच छः दिनों के लिए ससुराल जाना है, साले की शादी है। आप तो जानते ही हैं कि मैं एक तोती पाले हुए हूं, जिसे मैं जी जान से चाहता हूं। उसका मैं क्या करूं? कहां छोड़ूं? जमाना खराब है।''

मैंने कहा, ''किसन लाल जी, आप तो नाहक परेशान हैं। देखिये मेरे तोतों को, इतने बड़े पिंजड़े में कितने खुश हैं। उनकी धार्मिक प्रकृति जगजाहिर है। आप बिना किसी आशंका के बेझिझक अपनी तोती को यहां छोड़ दें। सब साथ-साथ रहेंगे। साथ-साथ खायेंगे पीयेंगे। कोई खतरा नहीं है।

पहले तो किसन लाल जी दो दो तोतों के बीच अपनी अकेली तोती को रखने के झिझक रहे थे पर हमारे तोतों की धार्मिक प्रकृति से प्रभावित होकर और कोई दूसरा चारा न देख अपनी तोती को उस पिंजरे में छोड़ दिया और ससुराल के लिए प्रस्थान कर गये।

इधर, हमारे दोनों तोतों ने अपने पिंजड़े में एक नया सदस्य पाकर कोई आपत्ति नहीं जतायी बल्कि तोती को गौर से देख कर वे गद्गद हो गये। कुरान की आयत पढ़ने वाले तोते ने 'सीताराम' 'सीताराम' जपने वाले तोते को चोंच मारते हुए कहा, ''पूजा पाठ अब बंद! दुआ कुबूल हो गई।'' ❁





केशव चन्द्र सिन्हा

जगतपुर, बांका

मो. : ९००६ ७९४ ०९२

हुआ सवेरा

क्षिति के ऊपर नील गगन में
प्रात लालिमा छायी है।
भुवन भास्कर की अगुवाई में
कुदरत सज आई है।।
गोल अंगारा सा अति सुंदर
निकल रहा है बाल रवि।
कोटि-कोटि जनमंत्र मुग्ध हो
शीश नवाते देख छवि।।
दूर हुआ अब घना सवेरा
स्वर्णिम आभा फेल रही।
तरू की डाली ऊपर चिड़िया
कलरव करती फुदक रही।।
क्षण में उड़कर मुक्त गगन में
निर्भय विचरण करती है।
उतर खेत खलिहानों में वे
बिखरे दाना चुगती है।।
घर में हलवाहे बैलों को
सुबह खिलाकर के तैयार।
ले जाते हैं खेत जोतने
आगे-पीछे एक कतार।।

गायें रंभाती खूंटे से
बंधी हुई बेबस होकर।
बछड़े को पय-पान कराने
मां की ममता वश होकर।।
दूर कहीं पदचाप ग्वाल के
सुनकर कान खड़ा करती।
उधर मुखातिब हो हरकत से
अपनी खुशी प्रकट करती।।
बाग बगीचा, उसर गोचर
आसपास सरिता के तीर।
निकल सैर को जाते लोग
बहता शीतल मंद समीर।।

गजल

बहुत याद आई तेरी तन्हाई के बाद



प्रमोद कुमार 'फितरत'

कोरियन्डा, बांका
मो. : 9801 २47 २९२

बहुत याद आई तेरी तन्हाई के बाद
हर बात निकल आती है, जुदाई के बाद।

हर रात का ये आलम है कि मैं नहीं सोया
घर से दूर निकल आया हूं, अलसाई के बाद।

बीतने को रात थी, की ऐसी घटी कहानी
फूट-फूट के रो पड़ा, तेरी वेवफाई के बाद।

जिंदा हूं, खैरियत है, खुदा के लिए पर
तेरे कूंचे में न पहुंचा, जग-हंसाई के बाद।

रास्ता अलग-अलग है, पर ये मत समझ नासमझ
हम भी मिलने आएंगे, इस लंबी तन्हाई के बाद।

चिंतन



प्रो. इशिता दास

(शहनाई, इन्दौर)

अविनाश प्लेस, बस स्टेण्ड, बांका - 813 102

मो. : 6260 650 537

सब कुछ और कुछ भी नहीं

जीवन की विशालता में, कुछ ही रिश्ते माँ के असीम प्यार और गहरे प्रभाव की बराबरी कर सकते हैं। वह एक प्यारी दोस्त, एक अटूट मार्गदर्शक और एक अपूरणीय सहायता प्रणाली हैं। उनकी उपस्थिति आत्मा के लिए सुखदायक मरहम है, और उनकी अनुपस्थिति एक अवर्णनीय शून्य छोड़ देती है जिसे उनके अप्रत्याशित निधन के लंबे समय बाद महसूस किया जाता है।

माँ एक मित्र होती है जो बिना आलोचना किए समझती है। बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनती है और बिना किसी शर्त के प्यार करती है। वह विश्वासपात्र है जो हमारे डर, सपनों और रहस्यों को अपने दिल के करीब रखती है। उनके आलिंगन में हमें जीवन के परीक्षणों और कष्टों से निपटने के लिए सांत्वना और शक्ति मिलती है। प्रोत्साहन के उनके कोमल शब्द हमारे मन में गूंजते रहते हैं, जो हमेशा हमें सबसे गहरे तूफानों में मार्गदर्शन करते हैं।

एक मार्गदर्शक के रूप में, माँ अमूल्य ज्ञान प्रदान करती है। उनके पाठ पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़कर हमें करुणा और सहानुभूति के बारे में सिखाते हैं। हर सौम्य संकेत और दृढ़ सलाह के साथ, वह हमारे चरित्र को आकार देती है और हमें अपने सर्वश्रेष्ठ संस्करण को उजागर करने में मदद करती है।

माँ वह अटूट समर्थन प्रणाली है जो हमारी दुनिया को एक साथ रखती है। वह एक मूक शक्ति है जो हमें जीत और हार दोनों में ले जाती है। जब जिंदगी हमें नीचे गिरा देती है, तो वह एक हाथ होती है जो हमें वापस ऊपर खींचती है। मां वह मुस्कान है जो हमें याद दिलाती है कि हम कभी अकेले नहीं हैं। उसका प्यार एक ऐसा किला है जो हमें नुकसान से बचाता है और हमारी क्षमता में उसका विश्वास हमें निडर होकर अपने सपनों का पीछा करने की शक्ति देता है।

एक माँ की अचानक मृत्यु एक गहरा शून्य छोड़ जाती है जिसे कोई भी शब्द पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकता है। उनकी अनुपस्थिति का दर्द उस प्यार और गर्मजोशी की लगातार याद दिलाता है जो वह हमारे जीवन में लेकर आईं। जिन्होंने ने भी अपनी माँ को खोया है, वह आज भी अपने माँ के स्नेह को अपने साथ महसूस करते होंगे। वह अभी भी उनके शक्ति का स्रोत है - उसका प्यार, एक शाश्वत आलिंगन जो हमें उनकी भौतिक उपस्थिति के बिना जीवन भर यात्रा करने की हिम्मत देता है।

दुःख कम हो सकता है और बह सकता है, लेकिन माँ के कोमल स्पर्श और उनकी करुणामयी आँखों की यादें बनी रहती हैं। हमें उस विरासत में सांत्वना मिलती है जो वह पीछे छोड़ गई हैं।

उनका वह प्यार जो हमेशा हमारे भीतर रहेगा, और जीवन को आकार देगा, और हमें याद दिलाएगा कि हम जो भी हैं उसकी वह एक अविभाज्य हिस्सा हैं और हमेशा रहेंगी। ❁



सुनील कुमार झा 'सारंग'

अधिवक्ता, बांका

मो. : 9931 735 105

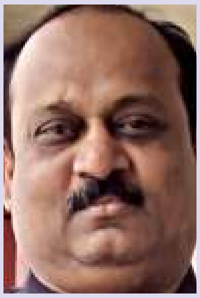
इंसान और हैवान

बनो इंसान गर तुम तो
मैं सीने से लिपट जाऊं
मगर हैवान की सूरत
ना फूटी आंख दिख पाए।
रहे जो दूर नजरों से
तभी मैं चैन सो पाऊं
जो सोए में झलक इनकी
तनिक भी रास ना आए।
रसीला हो के भी रस में
डुबो कर पंख में सट जाए
उड़ानों की थमी रफ्तार
धीमी चाल हो जाए
इन्हीं बातों से डरता हूं
कहीं सानिध्य ना पाए
तनिक सी चूक में इनकी
कहीं भौंहें न तन जाए
कुटिलता के झरोखे ना
सदा विष-व्यंग बरसाए
लपकता जश्न को जिह्वा
जहर पीना ना पड़ जाए
बनो इंसान....

विहंसते बाल वो बच्चे
युवाओं की मटरगश्ती।
नरक तब्दील हो सकती
सभी की मौज वो मस्ती।
महज संसर्ग से इनकी
किसी की जान जा सकती
उजड़ सकते कई कस्बे
पुरानी वो घनी बस्ती।
नजरों में जिन्हें विध्वंस
दिखती है बड़ी सस्ती
वही मझधार में लेकर
डुबो सकती भरी किस्ती
नहीं कोई भी हरकत जो
गले के पार हो जाए
बनो इंसान...।



गीत



गौतम सुमन गर्जना
सुमन वाटिका, वार्ड नं. : 12, अमरपुर-बांका
मो. : 9934 880 594

चले आइये

आप महफ़िल सजाने चले आइये!
दिल जरा-सा लगाने चले आइए।

कौन जाने कहां हो हमारा मिलन?
फिर से नज़रें मिलाने चले आइए।

जान से भी अधिक चाहता आपको!
दिल में हल-चल मचाने चले आइए।

क्या कहूँगा यही सोचता रह गया?
तीर फिर से चलाने चले आइए।

मंजिलें दूर हैं जानता हूँ मगर!
हौसला तो बढ़ाने चले आइए।

भाग्य मेरा न जाने कहां खो गया?
गायकी के 'बहाने' चले आइए।

गीत गाकर सुनाता रहूं कब तलक?
सुन के दिल के तराने चले आइए।

यार इतना विवश तो कभी ना हुआ!
मीत बन चह-चहाने चले आइए।

जिंदगी का सफ़र है अधूरा अभी!
प्यास अपनी मिटाने चले आइए।





टॉफी आनंद

भितिया, फुल्लीडुमर, बांका - 813 207
मो. : 9534 297 244

बिहार हूं मैं



महावीर की तपस्या, बुद्ध का अवतार हूँ मैं
अजी, सही सुना बिहार हूं मैं!

सीता की भूमि, विद्यापति का संसार हूँ मैं
जनक की नगरी, माँ गंगा का शृंगार हूँ मैं।
अजी, सही सुना बिहार हूं मैं!

चंद्रगुप्त का साहस, अशोक की तलवार हूँ मैं
बिंदुसार का शासन, मगध का आकार हूँ मैं।
अजी, सही सुना बिहार हूं मैं!

दिनकर की कविता, रेणु का सार हूँ मैं
नालंदा का ज्ञान, पर्वत मन्दार हूँ मैं।
अजी, सही सुना बिहार हूं मैं!

वाल्मिकी की रामायण, मिथिला का संस्कार हूँ मैं
पाणिनी का व्याकरण, ज्ञान का भण्डार हूँ मैं।
अजी, सही सुना बिहार हूं मैं!

राजेन्द्र का सपना, जे० पी० की हुंकार हूँ मैं।
गोविंद सिंह का तेज, कुंवर सिंह की ललकार हूँ मैं।
अजी, सही सुना बिहार हूं मैं।



मनोज कुमार मिश्र

सिरांय, बौंसी, बांका - 813 104
मो. : 9798 941 528

लघुकथा

मिलावट

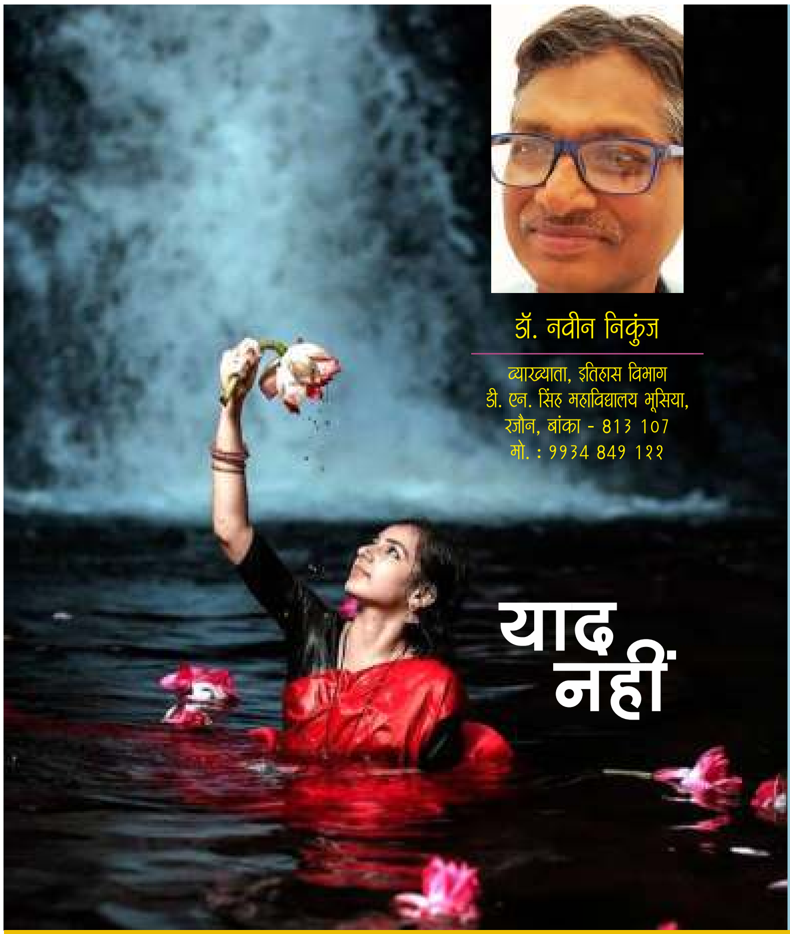


चार मक्खियां भूखी थी, उनमें से एक किसी एक मिठाई पर जा बैठी। मक्खी ने छककर मिठाई खाई किंतु उसकी अंतड़ियों में सूजन आ गई और वह वहीं मर गई। वास्तव में मिठाई में जहरीला रंग मिला हुआ था।

दूसरी मक्खी ने पहली का यह हाल देखा तो किसी मैदेवाले की दुकान पर जा बैठी लेकिन मैदा खाने के बाद उसके पेट में दर्द हुआ और वह भी तड़प कर मर गई। मैदे में फिटकरी मिली हुई थी।

तीसरी मक्खी ने किसी दूध वाले की दुकान पर जाकर अपनी भूख मिटाई लेकिन दूध में चॉक मिला था जिसके कारण वह भी मर गई।

अपनी सभी सहेलियों को मौत के मुंह में जाते देखकर चौथी मक्खी किसी दुकान पर पड़े कागज का जहर चाटने लगी उसने सोचा बिना दोस्तों के मर जाना ही अच्छा है। लेकिन, ज्यों-ज्यों जहर चाटती जाती त्यों-त्यों वह तंदुरुस्त और स्वस्थ होती जाती थी। उसने तो सोचा था कि जहर खाकर जान दे देगी लेकिन इस जहर में भी मिलावट थी!



डॉ. नवीन निकुंज
व्याख्याता, इतिहास विभाग
डी. एन. सिंह महाविद्यालय भूसिया,
रजौन, बांका - 813 107
मो. : 9934 849 122

याद नहीं

कितनी बार धरा पर आया
मुझको कुछ भी याद नहीं,
किन मां के अंकों में सोया
यह भी कुछ भी याद नहीं।

कितने जनक हुए थे मेरे
उनको भी कुछ याद नहीं,
मैं कितनी बार जनक बना
यह मुझको है याद नहीं।

साथी साथ रहा कब तक
क्यों यह मुझको याद नहीं,
इतना धुंधला क्यों अतीत
बातें कल की है याद नहीं।

राजा-रंक रागी-वैरागी
कब भूमिका कैसी अदा की,
विश्वायतन उस रंगमंच पर
अभिनय निज का याद नहीं।

हवन किया जीवन वो कितना
अंकित ग्रन्थों में याद नहीं,
गंगा तट कब-कब जला हूँ
वह नाश, अमर क्षण याद नहीं।



धनंजय मिश्र
ओढ़ारा, पुनसिया, बांका
मो. : 9771 243 406

आसान नहीं है

जहां जलन है, वहां तपन है
जलना तो आसान नहीं है
बिना प्यार की भाषा समझे
जीना भी आसान नहीं है।
जहां राग है, वहां आग है
लड़ना भी आसान नहीं है
जहां जान है, वहां प्राण है
मरना भी आसान नहीं है।
जहां डगर है, वहां सफर है
चलना भी आसान नहीं है
जहां प्यार है, वहां रार है
झुकना भी आसान नहीं है।
जहां जनम है, वहां मरण है
पलना भी आसान नहीं है
जहां हंसी है वहां खुशी है
हंसना भी आसान नहीं है।
जहां आस है, वहां खास है
पाना भी आसान नहीं है
जहां फूल है, वहां शूल है
खिलना भी आसान नहीं है।
जहां आन है, वहां शान है
अड़ना भी आसान नहीं है
कहे 'धनंजय' प्यार सभी पर
लाना भी आसान नहीं है।



45 वां वर्ष

स्थापना वर्ष - 15 अप्रैल 1978
पंजीयन : 852/92 बिहिसास (बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन)

बांका जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन

हिन्दी की सेवा
देश की सेवा है
इसके हितार्थ
हमसे जुड़ें

एटीएम में हो या कोई
मोबाइल या कंप्यूटर
एप्प कृपया इनमें
हिंदी का चयन करें।
अपना सम्मान बढ़ाएं।

**राष्ट्र की संवेदनाएं
हिंदी से जुड़ी हैं।
सभी लोक भाषाएं
इसमें समाहित हैं।
हिंदी इसलिये
सर्वमान्य है।**



समाचार पत्रों में जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन की गतिविधियां

शुभोवाक



चेतन से अवचेतन तक

प्रस्तोता : शंकर दास

सौजन्य : प्रो. मनोज कु. भगत

दिन एक अप्रैल शनिवार। स्थान सम्मेलन के संस्थापकों में रहे प्रो. रामनरेश भगतजी का आवास। उनके सामने मैं और डॉ. अचल भारती। कुछ क्षण बाद ही उनकी आँखों में पहचान की चमक एवं चेहरे पर प्रसन्नता की झलक से रू-ब-रू हुए हम। कारूणिक अवस्था के बीच, हमने संस्था के 45वें स्थापना समारोह एवं इस अवसर पर 'बांका-45' नामक स्मारिका के प्रकाशन की प्रस्तावना से उन्हें अवगत कराया। इस पर टूटे-फूटे अस्पष्ट शब्दों में वे कुछ बोल गए और फिर इति... आदि। वे जो कह गए उसका सार था। सम्मेलन की स्थापना के समय सन 1978 में; वे भी लगभग 45 वर्ष के ही थे।

बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए इनके पुत्र मनोजजी कहने लगे, ''इतना तो मैं भी जानता हूँ कि आपलोगों का काम बड़ा है। बचपन से ही सबकुछ देखता आ रहा हूँ। कह सकता हूँ कि सम्मेलन के प्रभामंडल का जादू पापाजी के सर चढ़ बोलता है। तभी तो ज्यादातर बिस्तर पर रहने वाले पापाजी, कुछ भी ऐसा स्मरण होते ही, उठकर बैठ जाते हैं। लगता है, मानो इनकी रगों में स्फूर्ति का नवसंचार उमड़ने लगा हो। ऐसे में टुकड़ों-टुकड़ों में अनेक बातें ये करते ही रहे हैं समय- समय पर, जिसे हूबहू बताना तो संभव नहीं। हाँ, बीज रूप में सांकेतिक तौर पर आपलोगों से साझा करने का लोभ मुझे भी है। शायद आपके किसी काम की हो।''

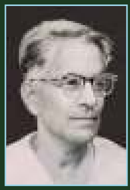
यथा नाम, सम्मेलन के कार्यक्रमों में जिला के कोने-कोने से साहित्यकारों की भागीदारी, हिन्दी दिवस, स्वतंत्रता एवं गणतंत्र दिवस जैसे अवसरों पर कार्यक्रम का आयोजन, वह भी प्रत्येक वर्ष। ...जैसी अनेक बातों की बड़बड़ाहट तो इनके लिए आम है। संस्था द्वारा नयी प्रतिभाओं की खोज, उनके लिए मंच एवं प्रकाशन की व्यवस्था, जिले की अन्य साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ना, सम्बद्ध शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं की प्रतिभा का विकास, उनका सम्मान, प्रोत्साहन, भाषण एवं काव्य पाठ आदि के माध्यमों से, ऐसे आयोजनों सहित मुख्यालय में खुला कवि सम्मेलन कराना, प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण, जैसे अनेक अभियान है, जो सम्मेलन द्वारा सम्पादित होता रहा है। जमीन से जुड़े होने का यशप्राप्त सम्मेलन अंग जनपद की मातृभाषा अंगिका के प्रसार एवं उन्नयन के दायित्व निर्वहन की सम्मेलन की चिंता के शब्द भी हमने उनसे सुने हैं।

पलभर ठहर कर एक क्षीण मुस्कान के साथ मनोजजी फिर शुरू हुए। जहाँ तक पापाजी के याददास्त की बात है तो अन्य बातें भले ही इन्हें कम याद हों, लेकिन जहाँ तक संस्था की बात है, तो साक्षी हैं आदरणीय शंकर दा, जब भी मिलने आए हैं -''क्या अचलजी भी आए हैं पूछना वे कभी नहीं भूलते। इसके साथ ही मूड के हिसाब से गिरिजा बाबू, कुंज बिहारी बाबू, बौंसी वाले उदयेशजी सहित समय-समय पर बांका में पदस्थापित पदाधिकारियों; यथा श्री वीरेंद्र कु. सिन्हा, डॉ. नागेंद्र पाठक आदि नाम जो जुड़कर हमारे हो गए, तक पहुंच जाते हैं। ...और हाँ! सम्मेलन की स्थापना के दिन तब के अनुमंडलीय बांका में पचास के लगभग अनुरागियों की मौजूदगी का पुलक रोमांच आज भी इनके चेहरे पर झलक जाता है। संसाधनों के अभाव में उन दिनों कभी-कभी ढिबरी की रौशनी में काव्य पाठ जैसी अनेक यादें इन्हें आज भी आह्लादित करती है।

मनोजजी को सुनकर मंत्रमुग्धता की स्थिति में; रोमांचक लगा मुझे 'जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का चेतन से अवचेतन तक व्याप्त होना। यह सोचना सुखद लगा कि आने वाली पीढ़ी को बांका मुख्यालय में शायद हमारी तरह शून्य से आरम्भ होने जैसी स्थिति से दो चार होना नहीं पड़े। वर्ष 2028 में अर्द्धशतकीय मुकाम के दायित्वबोध सहित अनेक संकल्प एवं सपनों को संजोये लम्हा-लम्हा खरामा खरामा सम्मेलन का सफर जारी है ।

हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है...

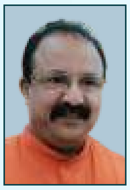




Anand Shankar Madhavan
FOUNDER
Mandar Vidyapeeth



Adityanath
Ex CHAIRMAN
Adwaita Mission



Arvindakshan
Secretary
Mandar Vidyapith

www.mandarvidyapith.org

सोऽहम्
मंदार विद्यापीठ

ADWAITA MISSION GROUP OF INSTITUTIONS

Mandar Vidyapeeth, Bounsi, Banka, Bihar - 813 104
Contact : 9801 820 820, 9307 888 288, 8102 314 645 arvindadwaita@gmail.com

City Office Emerald Forest Tower, S.M. College Road, Bhagalpur, Mob.- 6204 771 010

MANDAR VIDYAPEETH CAMPUS

Sr. Sec. Residential School

ADWAITA MISSION HIGH SCHOOOL

CBSE Affl. No.: 65070 I Sch. No. : 65070
Also, an accredited institution of NIOS, Delhi
Mob. No.: 9771459005 / 009 / 004

B. Ed. I D.El. Ed.

ADWAITA MISSION TRAINING COLLEGE

Recognised by NCII, Affiliated to TMBU & BSEB, Patna
Mob. No.: 9708 88 9009, 9771 45 9200, 9801 82 0820

SHIVDHAM CAMPUS

Sr. Sec. Residential School

ADWAITA MISSION HIGH SCHOOOL

CBSE Affl. No.: 330344 I Sch. No. : 65342
Also, an accredited institution of NIOS, Delhi
Mob. No.: 9771459005 / 009 / 004

B. Ed I D. El. Ed

MADHAVAN MEMORIAL COLLEGE OF EDUCATION

CBSE Affl. No.: 330344 I School No. : 65342
Also, an accredited institution of NIOS, Delhi
Mob. No.: 9771459005 / 009 / 004

Diploma Corses

ADWAITA MISSION INDUSTRIAL TRAINING INSTITUTE (I.T.I.)

Recognised by NCVT, Affiliated to Dept. of Tech Education Bihar
Mob. No.: 9771 459108, 9771 45 9021

B. Tech Degree

ADWAITA MISSION INSTITUTE OF TECHNOLOGY

Approved by AICTE, Delhi, Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna
Mob. No.: 9771 45 9010, 9771 45 9011



Salient Features

- Lush GREEN Campus
- Well Equipped Library
- Transport Facility
- Wi-Fi Enabled Campus